Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> **भिक्षु वाणी**
>
> मोटका ने खिम्या करणी दोहिली,
> कृपण नें दोहिलो दान।
> भर जीवन में शील दोहिलो,
> कायर नें दोरो चारित निधान।।
>
> समर्थ के लिए क्षमाक, कृपण के लिए दान, पूर्ण यौवन में शील और कायर के लिए संयम की साधना करना दुष्कर है।
>
> **–आचार्यश्री भिक्षु**

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 46 • 17 अगस्त - 23 अगस्त 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 15-08-2026 • पेज 16 ₹ 10 रुपये

'चौरासी लाख योनियों में दुर्लभ है मानव भव, मोक्ष ही जीवन का अंतिम लक्ष्य': आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

धन छूटे तो छूटे, धर्म पर न आए आंच! : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 16

Address Here

ना डिग्री का काम, ना पैसे का खेल... 'सेवा और विनय' से होगा किस्मत का मेल : आचार्यश्री महाश्रमण

शुश्रुषा से क्या मिलेगा?' विषय पर पूज्य प्रवर ने दी पावन देशना; गुरु व साधर्मिक सेवा को बताया जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि

लाडनूं।
10 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन में 'शुश्रुषा से क्या मिलेगा?' विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम के आधार पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन देशना प्रदान की।

'शुश्रुषा' का वास्तविक अर्थ और गुरु-साधर्मिक का स्थान–

१. अज्ञान का निवारण : धार्मिक और व्यावहारिक दोनों क्षेत्रों में गुरु का स्थान सर्वोच्च है। सद्गुरु आध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाते हैं और स्वयं त्याग व संयम के मार्ग पर चलते हैं।

२. शुश्रुषा का गहरा अर्थ : 'शुश्रुषा' का एक प्रमुख अर्थ है—सुनने की इच्छा रखना। यह व्यक्ति और बुद्धि दोनों का महान गुण है। जब हमारे सम्मान्य गुरु, वृद्ध या साधर्मिक कुछ कहें या उपदेश दें, तो उसे पूर्ण ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए। उस समय मन को अन्य कार्यों से हटाकर पूरी तरह से सुनने में लगाना ही सच्चा विनय है।

> अहंकार से दुर्गति मिलती है और विनय से बढ़ता है बल, बुद्धि और यश
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

३. साधर्मिक कौन? : जो एक धर्मसंघ, एक समाचारी, एक गुरु परंपरा और समान सिद्धांतों का पालन करते हैं, वे साधर्मिक बंधु हैं। उनकी बात सुनना और आवश्यकता पड़ने पर उनकी सेवा-परिचर्या करना सौभाग्य की बात है।

सेवा, विनय और तेरापंथ की महान परंपराएं–

१. उत्साह से हो सेवा : जो साधर्मिक या वृद्ध सेवा-परिचर्या के योग्य हैं, उनकी सेवा का अवसर मिलना बड़े सौभाग्य की बात है। (शेष पेज 12 पर)

भक्ति' और 'बहुमान' का अंतर .....

मंदिर का वह 'बेहूदा' भक्त, जिसके सामने खुद महादेव को झुकना पड़ा!

एक गांव में एक शिव मंदिर था। गांव के अन्य लोग कलश में जल ले जाकर पूजा करते थे, लेकिन एक भील युवक अपने मुंह में पानी भरकर लाता और शिव प्रतिमा पर अर्पित करता था। अन्य लोग उसे 'बेहूदा' समझते थे और उसके इस तरीके की निंदा करते थे।

अदृश्य संवाद: एक दिन कुछ लोग मंदिर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि शिव जी उस भील युवक से बहुत प्रेम से बातें कर रहे थे, लेकिन जैसे ही दूसरे भक्त उनके पास पहुंचे, शिव जी अदृश्य हो गए।

परीक्षा की घड़ी: कुछ समय बाद, मंदिर की प्रतिमा की एक आंख खंडित (फूट) हो गई। गांव के अन्य भक्त आए, अफसोस जताया, लेकिन किसी ने उसे ठीक करने का प्रयास नहीं किया। दूसरी ओर, भील युवक जब वहां आया और उसने भगवान की आंख खंडित देखी, तो उसे असहनीय पीड़ा हुई। उसने बिना संकोच किए अपनी स्वयं की आंख निकाल ली और प्रतिमा में फिट कर दी।

बहुमान का महत्व: जब बाद में लोग वापस आए, तो उन्हें एक दिव्य आवाज सुनाई दी कि शिव जी ने भील युवक को इसलिए दर्शन दिए क्योंकि उसमें 'भक्ति' के साथ-साथ 'बहुमान' (आंतरिक अनुराग) था, जो अन्य भक्तों में उस स्तर का नहीं था।

आचार्य श्री ने समझाया कि बहुमान का अर्थ है अपने आराध्य के लिए स्वयं कष्ट सहकर भी उनकी सेवा के लिए तत्पर रहना।

प्राण रहे या जाए... देव, गुरु और धर्म पर आस्था कभी न डगमगाए : आचार्यश्री महाश्रमण

धर्म श्रद्धा से क्या मिलेगा?' विषय पर पूज्य प्रवर ने दी पावन देशना; प्रातः सामायिक व नवकार जप का दिया संदेश

लाडनूं।
09 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, नेमानंदन, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन में 'धर्म श्रद्धा से क्या मिलेगा?' विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम के आधार पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन देशना प्रदान की।

'धर्म श्रद्धा से क्या मिलेगा?': सात सौख्यों से विरक्ति और अव्याबाध सुख–

१. भौतिक vs आध्यात्मिक सुख

> ना पैनिक, ना डिप्रेशन... धर्म-श्रद्धा में ही छिपा है हर समस्या का सॉल्यूशन!
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

: पूज्य प्रवर ने फरमाया कि 'सात' (साता वेदनीय कर्म) के उदय से मिलने वाले भौतिक सुख क्षणिक और अनुकूलता मात्र हैं। इसके विपरीत, कर्मों के कटने और आत्मा की निर्मलता से प्राप्त होने वाला 'आध्यात्मिक सुख'

अत्यंत उच्च कोटि का होता है।

२. अगार से अणगार की यात्रा : धर्म-श्रद्धावान व्यक्ति सात वेदनीय जनित भौतिक सुखों से विरक्त हो जाता है। (शेष पेज 12 पर)

सुगुरु कूटें तो कूटन दो.....

आचार्य श्री ने फरमाया कि संघीय जीवन में कभी-कभी परिस्थितियां कठिन हो सकती हैं, लेकिन यदि किसी कारणवश कोई साधु संघ से अलग हो भी जाए, तो वापस लौटकर अपने साधुपन को निभाने की भावना रखना बहुत महत्वपूर्ण है।

मुनि सोहनलाल जी स्वामी का उदाहरण: इस दौरान पूज्य प्रवर ने मुनि श्री सोहनलाल जी स्वामी (चूरू) के प्रसंग का उल्लेख किया और उनके द्वारा रचित एक भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया गया। यह गीत गुरु-भक्ति और शासन (संघ) के प्रति अटूट आस्था का प्रतीक है। गीत की मुख्य पंक्तियां हैं:

'सुगुरु कूटें तो कूटन दो, मुझे तो काम तुलसी से।'
'जगत रुठे तो रुठन दो, मुझे आराम शासन में।'

साधना का लक्ष्य : आचार्य श्री ने समझाया कि यह गीत बाह्य जगत की परवाह न करते हुए, अपने गुरु और अनुशासन के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना को दर्शाता है। कठिनाइयों को सहकर भी अपने साधुपन को सुरक्षित रखना परम धर्म है।

दायित्व निभाएं पर मोह से बचें... अनासक्ति ही आत्मा का सच्चा कवच : आचार्यश्री महाश्रमण

निर्वेद से क्या मिलेगा?' पूज्य प्रवर ने दी पावन देशना; भव, शरीर और भोग वैराग्य का समझाया आगमिक रहस्य

लाडनूं।
08 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन में 'निर्वेद से क्या मिलेगा?' विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को पावन देशना प्रदान की।

'निर्वेद से क्या मिलेगा?': सम्यक्त्व का तीसरा लक्षण और वैराग्य–

१. निर्वेद का अर्थ : सम्यक्त्व के लक्षणों में शम और संवेग के बाद तीसरा लक्षण निर्वेद (वैराग्य या विरक्ति का भाव) है। वैराग्य के तीन प्रकारः

२. भव वैराग्य : संसार चक्र और जन्म-मरण के परिभ्रमण से विरक्ति।

३.शरीर वैराग्यः शरीर का उपयोग साधना के लिए करना, पर उसके प्रति ममत्व या बाह्य सजावट-आकर्षण से परे रहना।

भोग वैराग्यः पांचों इंद्रियों के विषयों (शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श) और काम-भोगों के प्रति आसक्ति का अभाव।

> शरीर का उपयोग साधना के लिए हो, पर उसके प्रति ममत्व और सजावट का भाव न हो; यही सच्चा शरीर वैराग्य है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

अशौच अनुप्रेक्षा और गृहस्थ जीवन में अनासक्तिः

१. शरीर की अशुचिताः पूज्य प्रवर ने १२ भावनाओं में वर्णित 'अशौच अनुप्रेक्षा' का उल्लेख करते हुए बताया कि जिस शरीर के प्रति तीव्र मोहासक्ति होती है, वह भीतर से कितना अशुचि (अपवित्र) है।

२.गृहस्थ के लिए संदेशः व्यक्ति परिवार में रहकर अपने दायित्वों का पालन अवश्य करे, लेकिन निश्चय नय से यह चिंतन रखे कि 'यह परिवार भी मेरा नहीं है'। पदार्थों और व्यक्तियों के प्रति आसक्ति से बचना ही सच्चा निर्वेद है।

आरंभ-समारंभ का त्याग और सिद्धि मार्गः

१. अहिंसा व संयम : विरक्त व्यक्ति अनावश्यक आरंभ-समारंभ और ऐसी प्रवृत्तियों से दूर रहता है जिससे किसी प्राणी को कष्ट पहुँचे।

२. सिद्धि मार्ग का वरण : निर्वेद को प्राप्त साधक संसार मार्ग का विच्छेद कर मोक्ष (सिद्धि) मार्ग पर अग्रसर हो जाता है।

धाय माता का दृष्टांत:

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि जैसे एक धाय माता पूरे दिन एक बच्चे की सेवा-सुश्रूषा करती है, उसे नहलाती-खिलाती है और उसका पालन-पोषण करती है, लेकिन वह भली-भांति जानती है कि 'यह बच्चा मेरा नहीं है, यह सेठ जी या राजा का है'।

इसी प्रकार, एक सम्यक दृष्टि व्यक्ति संसार और परिवार में रहते हुए, अपने सभी दायित्वों का निर्वाह तो पूरी निष्ठा से करता है, परंतु भीतर से वह जानता है कि 'यह संसार मेरा नहीं है'। वह संसार के प्रति आसक्ति नहीं रखता, बल्कि निर्वेद और विरक्ति का भाव बनाए रखता है।

३. पावन प्रेरणा : पूज्यश्री ने साधना, स्वाध्याय, सेवा और खान-पान में संयम रखते हुए निर्वेद भाव को पुष्ट करने की प्रेरणा दी।

'चौरासी लाख योनियों में दुर्लभ है मानव भव, मोक्ष ही जीवन का अंतिम लक्ष्य' : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य आचार्यश्री ने समझाई मानव जीवन की 4 दुर्लभ बातें; RSS के डॉ. रवीन्द्र जोशी व पूर्व सांसद संजीव नाईक ने लिया आशीर्वाद

लाडनूं।
07 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, धर्म धुरंधर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन में 'संवेग से क्या मिलेगा?' विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को पावन देशना प्रदान की।

'संवेग से क्या मिलेगा?': दुर्लभ मानव जीवन और अनुत्तर धर्म श्रद्धा–

१. मानव जीवन की दुर्लभताः चौरासी लाख जीव योनियों में परिभ्रमण के बाद जीव को दुर्लभ मनुष्य गति प्राप्त होती है। शास्त्रों में वर्णित ४ दुर्लभ बातें हैं—मनुष्यत्व, धर्म श्रवण, धर्म श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

२.आत्मा की अमरता व मोक्षः शरीर नश्वर है, किन्तु आत्मा शाश्वत है। इसे न छेदा जा सकता है, न जलाया जा सकता है। चार गतियों (देव, मनुष्य, तिर्यंच, नरक) के पार ५वीं गति 'सिद्ध गति' (मोक्ष) है, जहाँ पहुँचने के बाद जीव संसार में पुनः वापस नहीं लौटता।

३. संवेग का परम फल : मोक्ष की तीव्र अभिलाषा (संवेग) से जीव 'अनुत्तर धर्म श्रद्धा' को प्राप्त करता है। जब श्रद्धा प्रगाढ़ हो जाती है, तो साधक प्राण त्यागना स्वीकार कर सकता है, किन्तु अपने धर्म और सिद्धांतों से पीछे नहीं हटता।

अन्य धर्मों का सम्मान और अडिग आस्था का संदेश–

१. समभाव व सहअस्तित्व : श्रावकों में भी प्रगाढ़ धर्म श्रद्धा होनी चाहिए। अपनी आस्था पर दृढ़ रहते हुए दूसरों की धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं के प्रति राग-द्वेष से परे रहना चाहिए। किसी की अवहेलना या आशातना न हो।

'देव जगत से सहायता की अपेक्षा...'

देवताओं से सहायता : पूज्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि यद्यपि देवों (देवी-देवताओं) से भौतिक सहायता की याचना करना आवश्यक नहीं है, किंतु यदि कोई भक्त अपने पूर्व गुरुओं जैसे भिक्षु स्वामी को याद करता है, तो उसे दो भावों से देखना चाहिए: एक तो उनके गुणों का स्मरण कर 'निर्जरा' (कर्मों का क्षय) करना, और दूसरा कष्टों के निवारण हेतु।

संकल्प की प्रधानता : पूज्य प्रवर ने बल दिया कि यदि कोई साधक या श्रावक यह संकल्प ले ले कि वह लौकिक देवी-देवताओं से कोई सहायता नहीं मांगेगा और केवल अपनी साधना (जप, तप, और आत्म-कल्याण) पर केंद्रित रहेगा, तो यह एक विशिष्ट मनोबल और उच्च साधना का परिचायक है।

तुलना : आचार्य जी ने इसे डॉक्टर की सहायता लेने के उदाहरण से भी समझाया, जहाँ सहायता मांगना पूरी तरह 'बुरा' नहीं है, लेकिन आत्म-निर्भरता और निष्काम साधना का मार्ग अधिक श्रेष्ठ माना गया है।

> प्राण छूटें तो छूटें, पर धर्म और श्रद्धा न छूटे... यही संवेग का परम फल
> –आचार्यश्री महाश्रमण

२. अडिगता : कैसी भी विषम परिस्थिति आए, श्रद्धालु अपनी धर्म-श्रद्धा और आस्था पर सदैव अडिग रहे।

विशिष्ट जनों का अभिवंदनः RSS व पूर्व सांसद की उपस्थितिः

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) 'कुटुंब प्रबोधन' के अखिल भारतीय संयोजक डॉ० रवीन्द्र जोशी ने पूज्य प्रवर के दर्शन कर अपने श्रद्धाभाव व्यक्त किए। नवी मुंबई के पूर्व सांसद संजीव नाईक ने पूज्यश्री की मंगल सन्निधि में विचार व्यक्त कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

युवाचार्यवर! चयन तुम्हारा, भाग्य खिला है आज हमारा।
महाश्रमण के अंतेवासी, बने संघ के शुभ्र सितारा॥

स्व. पुष्पादेवी कोठारी की पुण्य स्मृति में
सुरेन्द्र कुमार कोठारी
मनीष-ममता, भूपेश-मोनल
विहा, विहान, विराया कोठारी
कोमल-मोहित, धियाना, आरीत राठौड़ (सूरत)

केलवा-सांताक्रुज, मुम्बई

SUPER STONE PU STONE PANEL
SUPER BOND FUNCTION • QUALITY • DESIGN
SUPER Clad FLEXIBLE STONE PANELS

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
17 अगस्त - 23 अगस्त 2026

मनोनयन का अभिनव उत्सव उजले छंद रचाएं।
हम मंगल दीप जलाएं, लो सौ सौ बार बधाएं॥

: श्रद्धाप्रणत :

खेमचंद-ललिता देवी
विदित-प्रीति
समकित-गीतिका
संवृति, जेनिका मुकीम

श्रीMATI GEMS & JEWELS
New Delhi

Vidit Jain & Co.
New Delhi

'दायित्व बोध एवं प्रशिक्षण' कार्यशाला का आयोजन

कांदिवली, मुंबई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद (अभातेयुप) द्वारा आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी विद्यावती जी द्वितीय (ठाणा-5) के सान्निध्य में कांदिवली स्थित तेरापंथ भवन में 'दायित्व बोध एवं प्रशिक्षण' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में युवाओं को संगठनात्मक जिम्मेदारियों, शाखा संचालन, सदस्यता विस्तार और प्रभावी नेतृत्व से जुड़े विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन माण्डोत द्वारा ध्वजारोहण, सामूहिक संघगान एवं श्रावक निष्ठा पत्र के वाचन के साथ हुआ। तेरापंथ युवक परिषद (तेयुप) कांदिवली द्वारा विजय गीत प्रस्तुत किया गया।

तेयुप कांदिवली के अध्यक्ष आशीष श्रीश्रीमाल ने स्वागत उद्बोधन दिया, जबकि श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के मंत्री जगदीश परमार ने अतिथियों का स्वागत किया। शासनश्री साध्वी विद्यावती जी ने युवाओं को अपने दायित्वों के प्रति सजग और निष्ठावान रहते हुए समाज एवं संगठन के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने की प्रेरणा दी। साध्वी प्रीयंवदा जी ने सकारात्मक सोच, श्रेष्ठ चरित्र और कुशल व्यवहार के महत्व पर मार्गदर्शन दिया। साध्वी प्रेरणाश्री जी, साध्वी मृदुयशा जी और डॉ. साध्वी ऋद्धियशा जी ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन माण्डोत ने अभातेयुप की भावी योजनाओं और आगामी राष्ट्रीय अधिवेशन की जानकारी साझा की। महामंत्री सौरभ पटावरी ने शाखा संचालन, सदस्यता एवं संगठनात्मक व्यवस्था से जुड़े विषयों पर प्रशिक्षण दिया। विभिन्न राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं गणमान्य अतिथियों ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर सहयोगी दानदाताओं और श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन की टीम का अभातेयुप पदाधिकारियों द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, श्रावक-श्राविकाओं और बड़ी संख्या में युवाओं की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का विशेष आकर्षण 'किशोर फिएस्टा–इनोवेशन एक्सपो' रहा, जिसमें किशोरों और युवाओं की रचनात्मकता एवं नवाचार को प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मयंक धाकड़ ने किया।

सेवा, साधना और संस्कारों की प्रेरक यात्रा

अभातेममं द्वारा आयोजित 'सेवा साधिका' प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

लाडनूं।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी की प्रेरणा से आयोजित पाँच दिवसीय 'सेवा साधिका श्रेणी प्रशिक्षण शिविर' का लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती, रोहिणी में सफल एवं प्रेरणाप्रद समापन हुआ।

65 बहनों से प्रारंभ हुई सेवा साधिका श्रेणी की यह प्रेरक पहल सेवा-भाव को व्यवस्थित एवं प्रभावी रूप देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। पाँच दिवसीय प्रशिक्षण के माध्यम से बहनों को आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ सेवा के विभिन्न व्यावहारिक पक्षों का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

गुरुदेव का मंगल सान्निध्य–

शिविर के दौरान परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महती कृपा कर सेवा साधिका बहनों को अपना बहुमूल्य समय प्रदान किया। गुरुदेव ने बहनों को मंगलपाठ सुनाया तथा सेवा साधिका श्रेणी के उद्देश्य एवं महत्व पर मार्गदर्शन देते हुए निष्ठा, समर्पण एवं सेवा-भाव के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्षा सुमन नाहटा एवं चीफ ट्रस्टी कनक बरमेचा की गरिमामयी उपस्थिति भी रही।

युवाचार्य श्री महावीर मुनि ने बहनों को अपना बहुमूल्य समय प्रदान करते हुए सेवा साधिका के लिए तीन महत्वपूर्ण सूत्र—ज्ञान, विनय और विवेक—बताए। उन्होंने प्रेरणा दी कि सेवा करते समय इन तीनों गुणों को जीवन में उतारने से सेवा कार्य अधिक प्रभावी एवं सार्थक बन सकता है।

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने लगभग 20 बहनों से व्यक्तिगत संवाद कर उनके प्रशिक्षण अनुभव, विभिन्न परिस्थितियों में प्राप्त सीख तथा सेवा साधिका के रूप में आगे कार्य करने की उनकी दृष्टि जानी।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि सेवा साधिका श्रेणी में पूर्ण समर्पण एवं निष्ठा के साथ कार्य करने से यह श्रेणी आध्यात्मिक दृष्टि से निर्जरा का सुंदर माध्यम बन सकती है तथा संस्था के लिए एक सशक्त एवं उपयोगी सेवा-व्यवस्था के रूप में विकसित हो सकती है।

साध्वीवृंद का प्रेरक मार्गदर्शन–

पाँच दिनों तक साध्वीवृंद के सान्निध्य में विविध ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणाप्रद सत्र आयोजित हुए। इनमें तत्त्वज्ञान, तेरापंथ धर्मसंघ एवं जैन परंपरा का इतिहास, साध्वी प्रमुखाओं के जीवन एवं व्यक्तित्व, प्रेक्षा ध्यान, योग, नवकार मंत्र, कायोत्सर्ग, मंत्र साधना एवं व्यक्तित्व विकास जैसे विषयों को शामिल किया गया।

साध्वी डॉ. लावण्ययशा जी, साध्वी डॉ. सुमंगलप्रभा जी, साध्वी मध्यरेखा जी एवं साध्वी मयंकप्रभा जी ने विभिन्न विषयों पर बहनों का मार्गदर्शन किया तथा प्रशिक्षण को आध्यात्मिक एवं ज्ञानवर्धक आयाम प्रदान किया।

सेवा का व्यावहारिक प्रशिक्षण–

राष्ट्रीय संयोजिका अर्चना भंडारी ने संस्थागत कार्यप्रणाली, संस्था की रीति-नीति, सेवा व्यवस्था, रास्ते की सेवा एवं गोचरी सेवा से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

सह-संयोजिकाएँ पूजा सिंघवी, सारिका बागरेचा एवं शालिनी लुंकड़ ने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अलग-अलग परिस्थितियों में सेवा साधिका के दायित्व एवं सेवा-भाव को सहज एवं रोचक ढंग से समझाया। अभातेमम कार्यसमिति सदस्य राखी बैद एवं सज्जन पारेख का शिविर की व्यवस्थाओं एवं सफल आयोजन में विशेष सहयोग रहा।

यह शिविर केवल एक प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं, बल्कि सेवा को साधना, ज्ञान को आचरण और जीवन को संस्कारों से जोड़ने वाली एक प्रेरक यात्रा सिद्ध हुआ।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
17 अगस्त - 23 अगस्त 2026

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

अर्पित श्रद्धा का नीर

● मुनि काव्य कुमार ●

महक उठा श्रद्धा का अंबर, गूंज उठा जयघोष नया,
शासन नंदनवन सा महका, उदित हुआ विश्वास नया।
धरा धन्य है, गगन मुदित है, झूम रही हर एक दिशा,
युग ने पाया गौरव अनुपम— युवराज महावीर!

जहाँ धर्म की शीतल छाया, ज्ञान-ज्योति का दिव्य धाम,
भेदभाव के तम को हरता, प्रेम-करुणा का पावन ग्राम।
संयम-सुगंधित इस उपवन में, गूँजा गुरु का अमृत-तीर
आओ, महावीर....— युवराज महावीर!

तेज सूर्य-सा मुखमंडल, करुणा का अथाह विस्तार,
युवा चेतना की धड़कन बन, बहता अमृत का सतत प्रवाह।
शत-शत मंगल, कोटि वंदन, अर्पित श्रद्धा का नीर,
यश से आलोकित हो जग सारा— युवराज महावीर!

संकल्पों के स्वर्णिम रथ पर, बढ़ते रहें निरंतर आप,
संस्कारों की पावन धरती पर, जगमग हो हर एक प्रताप।
हिम-सी निष्ठा, सिंधु-सी गहराई, अचल रहे यह धीर,
कीर्ति-ध्वजा नभ तक लहराए— युवराज महावीर!

धर्मचक्र के दिव्य पथिक बन, अनुपम आपका प्रभाव रहे,
शौर्य, शील, अनुशासन का, जन-जन में सद्भाव रहे।
युग-युग तक यह यशगाथा, गाए सारा जग अधीर,
वंदित, पूजित, तेजस्वी— युवराज महावीर!

हम सबके प्राणों की धड़कन, शासन का अनुपम अभिमान,
तन-मन-सबकुछ अर्पित है अपना, धर्मसंघ रहे सदा बलवान।
एक संकेत पर चल पड़ेंगे, लेकर सेवा की शमशीर,
हम सब सदा आपकी सेवा में हाज़िर— युवराज महावीर!

जब-जब शासन देगा आह्वान, बढ़कर प्रथम पंक्ति में आएँगे,
त्याग, तपस्या, सेवा-पथ पर, जीवन सफल बनाएँगे।
विजय-पताका नभ तक फहरे, गूँजे शासन का हर तीर
जय-जय शासन, जय-जय गुरुवर, जय जय— युवराज महावीर!

युवाचार्य के मनोनयन पर जन-जन तुम्हें बधाएं

● नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ●

वंदन अभिनंदन की घड़ियां पुलकित दशों दिशाएं।
युवाचार्य के मनोनयन पर जन-जन तुम्हें बधाएं।
मनहर युवाचार्य महावीर शुभ भविष्य शासन तकदीर।।

स्मित आनन है नयन नम्र है भामंडल में पुलकन,
पिता सवाई-छगनी माता से संस्कारित जीवन।
जन्मभूमि फलसुंड धरा में कैसे खुशी समाए।।१।।

युवाचार्य के मनोनयन श्रेष्ठ श्रुताराधक कहलाए ज्ञानाराधन द्वारा,
दस वर्षों तक मुख्यमुनि रह गुरु को दिया सहारा।
अप्रमत्त संगीत साधना, विकसित है क्षमताएं।।२।।

तुलसी का आशीष मिला बचपन में पाए दर्शन,
महाप्रज्ञ के वरदहस्त से पाया संयम का धन।
महाश्रमण गुरुवर विकास के शिखरों तुम्हें चढ़ाएं।।३।।

लय - मांय न मांय मुंडेर

राजधानी में युवाराजा रो गण नै सौंप्यो प्रभु उपहार

● साध्वी पावन प्रभा ●

भिक्षु गण बगियां में तेरस दिन बणग्यो मंगल त्यौहार।
भिक्षु जन्म दिवस पर म्हारै खुशियां छाई अपरम्पार॥

गणराजा गुरु महाश्रमणवर युवाचार्य रो करयो चयन।
अद्भुत दृश्य दिखायो म्हाने हर्षित होग्या युगल नयन॥
महावीर मुनि नाम लियो जद गूंज उठ्यो प्रभु रो दरबार॥

विनय समर्पण आज्ञा निष्ठा स्यूं बढ़ग्या आगे-आगे।
महाश्रमण महावीर भिक्षु भारमलसी जोड़ी लागे॥
राजधानी में युवाराजा रो गण नै सौंप्यो प्रभु उपहार॥

फलसूंड गांव रो छोटो बालक महाप्रज्ञ चरणा आयो।
महाश्रमण सन्निधि में मुख्य मुनि बण जन-जन में छायो॥
सौ सौ सूरज आज उदित नन्दनवन बणग्यो गुलजार॥

आस्था रो स्वस्तिक रचावां ल्याया श्रद्धा रो सिन्दूर।
गांधीनगर में रंगरलिया भक्ति है भक्तां में भरपूर॥
बैंगलोर में वर्धापन स्यूं पावन रो मन है मनवार॥

जागो बहिनो, लाल प्रभात है

● शासनश्री साध्वी सुव्रता ●

जागो बहिनो, लाल प्रभात है,
चंदेरी की पुण्य धरा पर नया चाँद उदित आया है।
खुशियों का मौसम लाया है,
युवाचार्य के अभिनंदन में हर्ष-सिंधु लहराया है,
खुशियों का मौसम लाया है।

संघ-गगन में चाँद-सूरज की जोड़ी लग रही है प्यारी,
ज्योतिर्मय किरणों से होगी आलोकित धरती सारी।
खिलते-हँसते साथ सितारे, सबका दिल मुस्काया है,
खुशियों का मौसम लाया है।

आचार्य प्रवर श्री महाश्रमण ने अपनी चादर निर्मोही,
प्रज्ञा के धागों से गूँथी, उजली धवल-सी धोली।
ओजस्वी महावीर-सा युग फिर धरती पर आया है,
खुशियों का मौसम लाया है।

इस युग में हम हैं सौभागी, निर्मल-पावन संघ मिला,
एकाचार-विचार-संपदा से तेरापंथ आज खिला।
एक से बढ़कर एक महापुरुषों को हमने पाया है,
खुशियों का मौसम लाया है।

महावीर-सा भाल चमकता, आँखों से अमृतधारा,
चुंबक जैसे आकर्षण से आकर्षित शासन सारा।
सौ-सौ वंदन हैं चरणों में, पावन अवसर आया है,
खुशियों का मौसम लाया है।

सूरज-सम तेजस्वी बनकर चमको, संघ-क्षितिज पर तुम,
ओजस्वी, तेजस्वी बनकर निखरो संघ-धरा पर तुम।
हम किरणें हैं साथ सदा, और महाश्रमण सिर पर साया है,
खुशियों का मौसम लाया है।

लय - जागो बहिनो, लाल प्रभात है

खमा घणी गुरु महाश्रमण दिन्हों भाग्य जगाय

● समणश्रेणी द्वारा प्रस्तुत गीत ●

मैं धरती फळसूंड री, लागूँ लुळ लुळ पाय।
खमा घणी गुरु महाश्रमण, दिन्हों भाग्य जगाय॥

लाल सूंपियो गुरु चरण, कर दियो लालोलाल।
मैं जननी मुझने करी, गुरुवर मालोमाल॥

सुगुरु री महिमा है भारी, ग्यारमों आसण अवतारी,
म्हारो लाल है लडडू गोपाल, बणायो गुरुवर गिरधारी..
पिछले भव रो कोइ जोगी, कोचर कुल में आयो,
स्वच्छ देह पर सहज जन्म री अशुचि नहीं लायो,
छगनी अंगज साताकारी, सवाईनंदन साताकारी
म्हारो लाल है लडडू गोपाल...

गायो गीत कमाल गंगाणै, पिता पुत्र सागै,
महाप्रज्ञ री नजर पारखी, वैरागी मांगै,
झलक महावीर वीरता री, म्हारो लाल है लडडू गोपाल...

पैलो पाठ विनय रो ले, बचपन में गुणकारी (लियो)
बण्यो घुमक्कड़, फक्कड़, नहिं अक्कड़ री चिणगारी..
रखी शुद्ध संयम इकतारी, म्हारो लाल है लडडू गोपाल...

महाश्रमण रंगरेज रंगी आ सात रंग वाली (चदरिया)
ज्ञान, ध्यान, सम, शम, श्रम, निष्ठा, आज्ञा रखवाली,
बुलंदी कंठकला न्यारी, म्हारो लाल है लडडू गोपाल...

जनम्यों भले झोपड़ी में, नव युग नै जाणनहार (बणो),
खुली दिशावाँ, खुलो आसमां, बढ़ो करो विस्तार,
भिक्षु शासन रो जयकारी, म्हारो लाल है लडडू गोपाल...

आज बधावै संघ समूचो, फिर दुनियां सारी (बधासी),
भिक्षु जन्म दिन युवाचार्य रो चयन चमतकारी,
सुधर्मा सभा चकित सारी,

ओ योगक्षेम कर रह्यो अद्भुत भविष्य री त्यारी...
जैविभा सुंदर सिणगारी, लाडनूं रजधानी प्यारी...
सुगुरु री महिमा है भारी, ग्यारमों आसण अवतारी,
ओ योगक्षेम कर रह्यो अद्भुत भविष्य री त्यारी...

ऐसी चादर बनाई भिक्षु स्याम नै, सारा तेरा ये पंथ अमर हो गया,
महाश्रमण ले आए युवाचार्य को, सारा तेरा ये पंथ मगन हो गया,
सारा तेरा ये पंथ मगन हो गया-2

युवा चादर ओढ़ाई महावीर को,
जयजयकारों से गुंजित गगन हो गया ॥

लय – तावड़ा धीमों पड़ज्या रे

- जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।
- आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

व्यक्तिवाद एवं सुविधावाद को चुनौती देने वाला धर्मसंघ : तेरापंथ

नई दिल्ली।

शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में 267वें तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. सीताराम श्यामसुखा द्वारा मंगलाचरण के साथ हुआ। साध्वीश्री सुव्रताजी ने संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु ने शुभ मुहूर्त में तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की थी। आज तेरापंथ धर्मसंघ व्यापक विस्तार का रूप ले चुका है। उन्होंने कहा कि तेरापंथ एक नेतृत्व और अनुशासन में रहने वाला, विशुद्ध आचार का पालन करने वाला तथा व्यक्तिवाद एवं सुविधावाद को चुनौती देने वाला धर्मसंघ है। इस संघ में शिक्षा, साहित्य और शोध की त्रिवेणी निरंतर प्रवाहित होती रहती है। संगठन और समर्पण का अद्भुत स्वरूप यहां देखने को मिलता है तथा धर्मक्रांति और धर्मसमन्वय का मंगल दीप निरंतर प्रज्वलित होता रहता है। उन्होंने कहा कि हमें आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे कुशल संचालक एवं संरक्षक प्राप्त हुए हैं, जिनके अनुशासन एवं पावन सान्निध्य में संयम-साधना सतत एवं अनवरत चल रही है। कार्यक्रम में साध्वी सुमनप्रभाजी, साध्वी कार्तिकप्रभाजी एवं साध्वी चिंतनप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त किए तथा गीतिका का संगान किया। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के शांति जैन, दिल्ली सभा के संगठन मंत्री संजय संचेती, मध्य दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा कनक चोपड़ा एवं सुरेश जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन विकास बोथरा ने किया।

चतुर्मास का समय धर्म-ध्यान करने का सर्वोत्तम अवसर

मालवीय नगर, जयपुर।

राजधानी जयपुर के मालवीय नगर स्थित अणुविभा केन्द्र में रविवार को भारी उत्साह और धर्म-ध्यान के माहौल के बीच मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' एवं मुनि संभव कुमार जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश संपन्न हुआ। इस पावन अवसर पर एक भव्य 'योगक्षेम रैली' का आयोजन किया गया, जिसमें तेरापंथ समाज के सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने पूरे उल्लास के साथ सहभागिता की। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को अपना चातुर्मासिक संदेश प्रदान किया। उन्होंने कहा, 'चातुर्मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र, और तप-संयम साधना का स्वर्णिम अवसर है।' मुनिश्री जी ने एक बेहद सुंदर दृष्टांत देते हुए समझाया कि जिस प्रकार बारिश का मौसम किसानों के लिए खेती करने का मुख्य समय होता है, ठीक वैसे ही धार्मिक जनों के लिए यह चतुर्मास का समय धर्म-ध्यान करने का सर्वोत्तम अवसर होता है।

उन्होंने कहा कि किसान की खेती का लक्ष्य जहाँ अनाज प्राप्त करना होता है, वहीं धार्मिक व्यक्ति के धर्म करने का लक्ष्य अपनी आत्मा को पाना होता है। मुनिश्री जी ने आगे कहा कि वर्षावास कषाय मुक्ति का, अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ जैसी प्रवृत्तियों से मुक्त होने का स्वर्णिम काल है।

मंत्रदीक्षा कार्यक्रम का आयोजन

चेम्बूर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी साध्वी निर्वाणश्रीजी ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में मंत्रदीक्षा का भव्य आयोजन हुआ। तेरापंथ युवक परिषद चेम्बूर द्वारा आयोजित इस कार्यकम में श्रीमद् रायचंद, जीतमल एवं माणकगणी जोन की ग्यारह (11) ज्ञानशालाओं से करीब 200 बच्चे व 80 प्रशिक्षिकाएं उपस्थित हुई। मंत्रदीक्षा के उपक्रम को संपादित करते हुए विदुषी साध्वी निर्वाणश्रीजी ने कहा- जो स्मरण मात्र से हमारी रक्षा करता है, वह मंत्र है। जैन शासन का महामंत्र नवकार सर्वोच्च मंत्र है। यह मंत्र सर्व पापों का नाशक है। सर्व मंगलों में सर्वोपरी है। बच्चे इस मंत्र का स्मरण करे व अपने जीवन को सुसंस्कारों से सज्जित करे।

प्रबुद्ध साध्वी डा. योगक्षेमप्रभाजी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा- आज के कार्यक्रम की मुख्य थीम है-अहिंसा। ज्ञानशाला के बच्चों ने बहुत ही सुंदर प्रस्तुति करते हुए अहिंसा की महिमा बताई है। कार्यक्रम का शुभारंभ चेम्बूर ज्ञानशाला की बालिकाओं के गीत से हुआ। कार्यक्रम संयोजक महेश गांधी ने स्वागत व अभय गांधी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

पाणिग्रहण संस्कार

सूरत। जसोल निवासी सूरत प्रवासी रमेश भंसाली के सुपुत्र देवांग भंसाली का शुभ पाणिग्रहण संस्कार मोकलसर निवासी सूरत प्रवासी ललित कुमार विनायकिया की सुपुत्री पल्लवी के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, धर्मचंद श्यामसुख ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

'संबोधि परियोजना' के द्वितीय चरण का शुभारंभ

चेम्बूर।

तेरापंथ युवक परिषद्, चेम्बूर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर (ATDC) के स्थानांतरण समारोह ने सेवा के क्षेत्र में एक नया इतिहास रच दिया। यह अवसर केवल तेरापंथ युवक परिषद् के लिए ही नहीं, बल्कि तेरापंथ सभा, चेम्बूर ट्रस्ट एवं सम्पूर्ण चेम्बूर समाज के लिए सेवा का एक स्वर्णिम अध्याय बन गया। कार्यक्रम पूज्य साध्वी निर्वाणश्रीजी आदि ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

साध्वीश्रीजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि आचार्य तुलसी के नाम से जुड़ा यह सेवा प्रकल्प उनके मानवीय दृष्टिकोण एवं सेवा-दर्शन का साकार स्वरूप है। उन्होंने इस सेवा अभियान को सफल बनाने वाले सभी कार्यकर्ताओं, सहयोगियों एवं दानदाताओं के प्रति मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं। मुख्य अतिथि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने कहा कि मुंबई के कार्यकर्ता केवल आयोजन तक सीमित नहीं रहते, बल्कि प्रत्येक सेवा उपक्रम को समर्पण, संगठन शक्ति एवं सेवाभाव के साथ साकार कर धर्मसंघ की प्रभावना करते हैं।

उन्होंने कहा कि ATDC आज चेम्बूर की एक विशिष्ट पहचान बन चुका है तथा पूर्व अध्यक्ष संदीप कोठारी जैसे अनुभवी कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन में परिषद् निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर रही है। तेरापंथ सभा, चेम्बूर के अध्यक्ष लक्ष्मण ने सभा की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया। पूर्व एबीटीवाईपी अध्यक्ष किशन डागलिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी को 'निर्माणश्रीजी' कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।' उन्होंने कहा कि साध्वीश्री अपने प्रेरक व्यक्तित्व से कार्यकर्ताओं में सेवा, समर्पण एवं आध्यात्मिक चेतना का सतत संचार करती रहती हैं। स्थानीय महिला मंडल अध्यक्षा ममता कच्छारा तथा तेरापंथ युवक परिषद्, चेम्बूर के अध्यक्ष हिमांशु गन्ना ने भी अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। इसी अवसर पर 'संबोधि परियोजना' के द्वितीय चरण के अंतर्गत आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर (ATDC) में एक नवीन साहित्य स्टैंड का शुभ अनावरण भी सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्थानीय सभा मंत्री दिलीप मेहता ने अपना समय-विसर्जन कर प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया।

पूर्व अध्यक्ष संदीप कोठारी ने संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित उद्बोधन दिया। मुंबई सभा अध्यक्ष सुरेन्द्र कोठारी एवं कोषाध्यक्ष रिंकू बापना की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अंत में तेरापंथ युवक परिषद्, चेम्बूर के मंत्री कपिल मेहता ने संत-सान्निध्य, सभी अतिथियों, दानदाताओं, सहयोगियों एवं उपस्थित जनसमुदाय के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

मातृ पितृ देवो भवः कार्यक्रम का आयोजन

अहमदाबाद।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अहमदाबाद द्वारा आयोजित एक समसामयिक कार्यक्रम मातृ पितृ देवो भवः का आयोजन युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की प्रबुद्ध शिष्या साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, शाहीबाग पर किया गया। 'ग्रंथों में है बतलाया जिनका बड़ा हम पे उपकार है...' सुमधुर गीतिका के माध्यम से साध्वी समत्वयशाजी ने अपने स्वरलहरियों के साथ माता-पिता के महत्व को बताया।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने प्रासंगिक उद्बोधन देते हुए पितृदेवो भवः पर बताया कि परिवार के स्वप्नों के लिए पिता अपने स्वप्नों को गौण कर बच्चों की हर इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयास करता है। पिता जाते-जाते अपने बेटों को वसीयत और नसीहत आशीर्वाद स्वरूप देकर जाता है। आगे प्रेरणा दी कि पिता का सम्मान करने के साथ उनकी इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयास करें।

FAMILY का अर्थ समझाते हुए कहा - Father And Mother I Love You। साध्वी अणिमाश्रीजी ने उपस्थित विशाल परिषद को मार्मिक भावपूर्ण उद्बोधन देते हुए कहा - मां हमारे जीवन का शुभारंभ है।

प्रत्येक दु:ख को झेलकर अपने जिगर के टुकड़ों को संस्कारित करते हुए बड़ा करती है। आपने अनेक दृष्टांतों के साथ गणेशजी द्वारा सृष्टि की परिक्रमा करने का दृष्टांत बताते हुए माता-पिता के महत्व को समझाया। आगे कहा - माता-पिता के पास दुआओं का खजाना है, लूटना चाहो जितना लूट लो। उनसे प्राप्त आशीर्वाद और उनके आभामंडल से निकलने वाली किरणें भाग्योदय एवं रक्षा-कवच बन जाएंगी। माता-पिता खुश हैं तो आपका भविष्य सुरक्षित है।

ठाणं सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि माता-पिता , मालिक (आजीविका प्रदाता) एवं गुरु (जीवन की सही राह दिखाने वाले)के उपकारों से उऋण नहीं हो सकते। मां-बाप के कर्ज उतारने का प्रयास करें, उन्हें गुरु दर्शन कराएं, आध्यात्मिक सद्गति में सहायक बनें।

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने संचालन करते हुए बताया कि घर का गौरव मां है जो संस्कार सिखाती है, और घर का अस्तित्व पिता है जो संघर्ष करना सिखाता है।

इस अवसर पर भिक्षु भजन मंडल द्वारा नवमनोनीत नवम युवाचार्य महावीर की वर्धापना में गीतिका का मंगल संगान किया गया।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम युवाचार्य, संघ-गौरव, श्रुत-मनीषी : डॉ. महावीर कुमार

● अर्जुन लाल मेडतवाल ●

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता, महातपस्वी युगप्रधान पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के नेतृत्व में दूसरा योगक्षेम वर्ष जैन विश्व भारती, लाडनूं में मनाया जा रहा है। इसी दौरान आद्य संस्थापक आचार्य श्री भिक्षु के ३०१वें जन्मदिवस (२८ जुलाई २०२६) पर पूज्य प्रवर ने अपने सुशिष्य मुख्य मुनि डॉ. महावीर कुमार जी को तेरापंथ धर्मसंघ के नवम युवाचार्य पद पर प्रस्थापित कर संघ-इतिहास में नया स्वर्णिम अध्याय जोड़ा। आचार्य द्वारा उत्तराधिकारी की नियुक्ति धर्मसंघ की परंपरा और अनुशासन की बागडोर सौंपने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण दायित्व होता है। पूज्य गुरुदेव ने मुनि श्री महावीर कुमार जी को पहले 'मुख्य मुनि' के रूप में प्रतिष्ठित किया और कसौटी पर शत-प्रतिशत खरा उतरने के बाद उन्हें युवाचार्य पद सौंपा।

विलक्षण प्रतिभा एवं अगाध ज्ञान-साधना

दीक्षा : फलसूंड (शिवांची मालानी) में जन्मे बालक महावीर कुमार ने सन् २००२ में जसोल में प्रेक्षा-प्रणेता पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के करकमलों से भागवती दीक्षा अंगीकार की।

श्रेष्ठ श्रुताराधक : धर्मसंघ के सप्तवर्षीय उच्च स्तरीय पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त कर वे 'श्रेष्ठ श्रुताराधक' से विभूषित हुए।

अकादमिक शिखर : स्नातक (B.A.) में विश्वविद्यालय में स्वर्ण पदक (यूनिवर्सिटी टॉपर) हासिल किया तथा जैन विश्व भारती संस्थान से M.A. की उपाधि प्राप्त की।

शास्त्रज्ञान व कंठस्थीकरण : दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आचारबोध जैसे अनेक प्रामाणिक ग्रंथों का अगाध पारायण किया। हजारों प्राकृत-संस्कृत श्लोक उन्हें अहर्निश कंठस्थ हैं।

शोध, संघ-सेवा एवं ऐतिहासिक उपलब्धि

समीक्षा परिषद व संस्कार प्रभारी: सन् २०१२ में समीक्षा परिषद के सदस्य बने तथा सन् २०१५ से बाल एवं नवदीक्षित मुनियों के संस्कार निर्माण प्रभारी का दायित्व निभाया।

विद्या वारिधि (Ph.D.): वर्ष २०२२ में 'जैन आगमों में पर्यावरणीय चिंतन : एक अध्ययन' पर Ph.D. की उपाधि प्राप्त की। वे तेरापंथ इतिहास में डॉक्टरेट उपाधि से विभूषित प्रथम युवाचार्य बने।

ओजस्वी वक्ता एवं अनन्य गुरुभक्ति

युवाचार्य श्री का मधुर गीत-गुंजन और ओजस्वी वाणी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। सूरत चातुर्मास में उनके 'जैन रामायण' के व्याख्यानों ने समाज को भाव-विभोर कर दिया था। उनकी गुरुभक्ति अद्वितीय है; यदि पूज्य गुरुदेव 'बिंब' हैं, तो युवाचार्य श्री उनके निश्चल 'प्रतिबिंब'। पदयात्राओं और संघ-संचालन में वे सदैव गुरु-सहयोगी रहते हैं।

विनय, चारित्रिक संपदा एवं मंगल कामना

उत्तुंग शैक्षणिक योग्यताओं के साथ-साथ उनका विनयभाव, सौम्यता, सरलता और अनुशासन जन-जन का मन मोह लेता है। वे गुरुवृंद, साधु-वृंद एवं संपूर्ण श्रावक समाज के प्रति अत्यंत मधुर व आत्मीय व्यवहार रखते हैं। ऐसे प्रखर ज्ञानी एवं विनय मूर्ति युवाचार्य का प्राप्त होना तेरापंथ धर्मसंघ का अहोभाग्य है। मैं नवम युवाचार्य श्री डॉ. महावीर कुमार जी के चरणों में करबद्ध अभिवंदना करते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायुष्य और अहर्निश आध्यात्मिक विकास की मंगल कामना करता हूँ।

एक दृश्यः अनेक अनुभूतियां

● साध्वी ऋद्धिप्रभा ●

आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को युवाचार्य मनोनयन का नयनाभिराम दृश्य देखकर मेरे मन में जिज्ञासा हुई—क्या वह दृश्य केवल उतना ही था जितना हमें खुली आँखों से दीख रहा था? स्वयं से ही जवाब मिला—नहीं, उस दृश्य के भीतर अनेक दृश्य अभिव्यक्त हो रहे थे जिसका मैंने अनुभव किया। हम सबके लिए वह क्षण 'आचार्य अपने गुरुभाई या शिष्य को उत्तराधिकारी के रूप में चुने तो सभी उसे सहर्ष स्वीकार करें'—तेरापंथ की इस मौलिक मर्यादा को जिसे हम वर्षों से सुनते आ रहे हैं, बोलते आ रहे हैं, उसे अनुभूत करने का भी महावीर-तुल्य अपूर्व अवसर था।

आचार्य प्रवर द्वारा जब अत्यंत प्रसन्नता पूर्वक 'आओ मुनि...' का आह्वान किया गया तो दर्शकों के भीतर हलचल थी, अगला दृश्य देखने की उत्सुकता थी। पर जिन्हें आह्वान किया गया था, उनके मुखारविंद पर सहजता थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि भीतर में स्थिरता और समता थी। अभ्यर्थना युवाचार्य प्रवर के तटस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व की।

आचार्य प्रवर ने ओजस्वी वाणी में युवाचार्य पद की घोषणा की और युवाचार्यश्री को उत्तराधिकार की चादर ओढ़ाई। जब युवाचार्य प्रवर ने उस उत्तराधिकार की चादर को उत्तरदायित्व की चादर के रूप में स्वीकार किया तो ऐसा लगा मानो निरहंकारिता का साक्षात् प्रकटीकरण हुआ हो।

वर्धापना युवाचार्यश्री की निरहंकारी निस्पृह चेतना की। जब युवाचार्य प्रवर ने आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आचार्य प्रवर के चरणों में तथा गोद में मस्तक को रखा और आचार्यप्रवर ने अपने हस्तकमलों को युवाचार्य प्रवर के मस्तक पर रखा, और अपने ही पास अपने पट्ट पर बिठाया तो ऐसा अनुभव हो रहा था मानो शक्ति-संप्रेषण की प्रक्रिया चल रही थी। उस प्रक्रिया में एक ओर से वात्सल्य के साथ शक्ति को भेजा जा रहा था तो दूसरी ओर से युवाचार्य प्रवर के द्वारा विनम्रता के साथ उसे ग्रहण किया जा रहा था।

अभिवंदना युवाचार्यप्रवर की उत्कृष्ट विनम्रता की। अभ्यर्थना उन सभी गुणों की जिन गुणों के कारण आप आचार्यप्रवर की पारखी नजरों में खरे उतरे। वर्धापना उन सभी गुणों की जिन गुणों ने आपको तेरापंथ का ताज धारण करने योग्य बनाया। भिवंदना उन सभी गुणों की जिन गुणों ने संपूर्ण धर्मसंघ को आश्वासन दिया — 'शुभ भविष्य है सामने'।

तराशे तो खुदा निकले

● तुलसी जैन (तुषरा) ●

गणाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के लगभग 83 वर्ष एवं प्रज्ञा पुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञ के 90 वर्ष के कालखंड की समस्त भूति, विभूति और अनुभूति से युक्त हैं युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण। आचार्य प्रवर ने अपनी संचित ज्ञान संपदा एवं आदर्श आचरण परंपरा को मुनि श्री महावीर कुमार जी में संक्रांत करने का मानो दृढ़ संकल्प कर लिया है। लक्ष्य यही रहा है कि अपने आश्रित को अपने तुल्य बनाना या उससे भी आगे गतिशील देखना। साधारणतया हर पिता चाहता है कि उसका पुत्र उससे आगे निकले, और हर गुरु की यही कामना होती है कि उनका शिष्य ज्ञान, दर्शन और चरित्र को पुष्ट करते हुए शीघ्र सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बने।

गुरु की कोमलता, अनुशास्ता की कठोरता

तेरापंथ के भाग्यविधाता आचार्य श्री भिक्षु द्वारा निर्मित विधान 260–270 वर्षों के बाद भी उतना ही प्रासंगिक है। इसका 'एक गुरु और एक विधान' का नियम अद्भुत है। यह हमारी चारित्रात्माओं को आचार्य बनने की पात्रता अर्जित करने का अवसर तो देता है, किंतु पद का सपना देखने का निर्ममता से निषेध करता है। गुरु की विशेषता 'कोमलता' है, पर अनुशास्ता की भूमिका में उन्हें 'कठोर' होना पड़ता है। तेरापंथ के आचार्य को चतुर्विध धर्मसंघ का अनुशासन बनाए रखना होता है। इसीलिए कड़ाई और अप्रिय निर्णय लेना अनिवार्य हो जाता है। इस साहस के अभाव में 'पॉलिसी पैरालिसिस' आ जाता है, जो संघ के लिए दीमक का काम करता है। महामना भिक्षु ने न केवल मर्यादाओं का निर्माण किया, बल्कि उनके प्रति जनमानस में अटूट आस्था भी जगाई।

संभावनाएँ बनीं वास्तविकता

अपनी सेवा, समर्पण, विनयशीलता और कृतज्ञता के बल पर मुनिश्री महावीर कुमार जी निरंतर आगे बढ़ते गए। बचपन से ही त्याग के संस्कार और अध्यात्म के भाव पुष्ट होने लगे। वे भली-भांति संयम करना जानते हैं और अपनी आकांक्षाओं पर विराम लगाने में दक्ष हैं। आचार्य महाश्रमण जी ने उनमें प्रचुर संभावनाओं का संधान किया, जो समय के साथ वास्तविकता में बदलती चली गईं। श्रेष्ठ श्रुत आराधक, मुख्य मुनि और बहुश्रुत परिषद के संयोजक जैसे गरिमामय अलंकरणों से उनका व्यक्तित्व उद्भाषित होने लगा। वे जानते हैं कि साधना की ऊँचाई वीतरागता है, तो उसकी गहराई विनम्रता। इन दिव्य गुणों से विभूषित होकर वे संघ और संघपति की आँखों के तारे बन गए।

लोकोत्तम महावीर

आषाढ़ शुक्ल तेरस, विक्रम संवत 2083 (27 जुलाई 2026, सोमवार) को जैन विश्व भारती के पावन प्रांगण में आचार्य श्री भिक्षु के 301वें जन्म दिवस तथा 269वें बोधि दिवस के ऐतिहासिक अवसर पर आचार्य प्रवर ने मुनि श्री महावीर कुमार जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। संघ की धवल चादर ओढ़ाकर उनका अभिनंदन किया गया। युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी की आकृति और प्रकृति दोनों ही निर्मल, निश्छल और निर्भय हैं। विवेकानंद को रामकृष्ण परमहंस मिले और महाप्रज्ञ को तुलसी; वैसे ही मुनि महावीर को आचार्य महाश्रमण मिले हैं। युवाचार्य प्रवर ऋजुता में शिशु जैसे, चिंतन में प्रौढ़ और आयु से युवा हैं। शांत व सौम्य स्वभाव के युवाचार्य जी के मुख से जब वाणी बहती है, तो श्रोता मग्न हो जाते हैं। सेवा उनके जीवन का परम लक्ष्य है।

भवितव्यता

इस प्रसंग में कुछ घटनाओं का उल्लेख प्रासंगिक होगा। साध्वीप्रमुखाश्री झमकू जी महासती जी ने वरिष्ठ साध्वीश्री रूपा जी को संकेत दिया था कि मुनि महावीर धर्मसंघ के नाथ बन सकते हैं। इसी प्रकार वर्ष 2013 के लाडनूं चातुर्मास में शासनगौरव साध्वीश्री कनकश्री जी के मुख से सहज ही निकला था कि यह मुनि धर्मसंघ का उज्ज्वल नक्षत्र बनेगा। वे भविष्यवाणियाँ आज सत्य सिद्ध हो रही हैं।

निवेदन

श्रद्धेय युवाचार्यश्री को त्रैकालिक दृष्टि रखनी होगी—अतीत पर निरंतर चिंतन, वर्तमान पर ध्यान और भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए भविष्य पर सतर्क दृष्टि। मर्यादा और अनुशासन में रहने वाला संघ ही सतत विकास कर सकता है। आपको परम धैर्य संपन्न और लचीला बनना होगा, क्योंकि— 'A moment of patience can prevent a great disaster, and a moment of impatience can ruin a whole life.'

किसी शायर ने सच ही लिखा है:

बुतों! शाबाश है तुमको, तरक्की इसको कहते हैं।
अगर न तराशे तो पत्थर थे,
तराशे तो खुदा निकले।।
अंत में— समर्थ स्रष्टा को प्रणाम...
उनकी सार्थक सृष्टि को प्रणाम...

3 बातें ज्ञान की

– आचार्यश्री महाश्रमण

तीन प्रकार का सुप्रणिधान

नमस्कार महामंत्र का दूसरा पद है—'णमो सिद्धाणं'। संसार के सारे जीवों में सिद्धों से बड़ा कोई जीव नहीं होता। वे परम आत्मा होते हैं। उन सिद्धों को नमन।

नमस्कार महामंत्र का तीसरा पद है— णमो आयरियाणं। दुनिया में आचार्यों का भी बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे धर्म शासन के प्रमुख होते हैं। उन आचार्यों को नमन।

नमस्कार महामंत्र का चौथा पद है— णमो उवज्झायाणं। उपाध्याय ज्ञानदाता हैं। स्वयं शास्त्रों का ज्ञान करते हैं और दूसरों को ज्ञान बांटते हैं। उन उपाध्यायों को नमन।

नमस्कार महामंत्र का पांचवां पद है—णमो लोए सव्वसाहूणं। जो साधनाशील हैं, पांच महाव्रतों का पालन करने वाले होते हैं, उन साधुओं को नमन।

इस प्रकार इतनी पवित्र आत्माओं का संकलन जिस नमस्कार महामंत्र में सन्निहित है, उस महामंत्र का स्मरण, जप, आत्म-कल्याण के लिए, आत्म-शुद्धि के लिए, भाव-शुद्धि के लिए करना चाहिए। इससे आत्म-शुद्धि का लाभ मिलता है, निर्जरा का लाभ मिलता है और संयम होता है। जब नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करने में हम लीन रहते हैं, तब वचन की एकाग्रता होती है, मन भी उसमें लगा हुआ रहता है और साथ में शरीर की भी स्थिरता रहती है। इस प्रकार मन, वचन और काय—तीनों योगों की एकाग्रता हो जाती है।

जप करने से विघ्न-बाधाओं के निवारण में, मनोबल को बनाए रखने में और अभय रहने में भी सहयोग मिलता है। विघ्न-बाधाओं के निवारण के लिए आदमी को ज्यादा इधर-उधर नहीं जाना चाहिए। तकलीफें तो जीवन में आ सकती हैं, किन्तु हम इतने अधीर क्यों बनें? भगवती सूत्र में श्रावक के लिए कहा गया है कि श्रावक ऐसा होना चाहिए जो आपत्तिकाल में भी देवताओं के सहयोग की इच्छा न रखे। वह श्रावक की मजबूती का लक्षण है। कष्ट आए तो आए, किन्तु याचना न करना, कठिनाई में भी देवताओं की सहायता की इच्छा न रखना बहुत बड़ी बात होती है। यदि इतना मनोबल न हो तो एक सीमा तय की जा सकती है कि मैं ज्यादा सहायता की इच्छा नहीं करूंगा। कठिनाई आएगी तो निर्जरा होगी, कर्म कटेंगे—यह सोचकर कठिनाई को सहन करे। विघ्न-बाधाओं के निवारण के लिए, आपत्ति-विपत्ति से बचने के लिए, भौतिक सुविधा या लाभ पाने के लिए भी अत्यधिक किसी अन्य की शरण नहीं लेनी चाहिए; इधर-उधर भ्रमण नहीं करना चाहिए। अपने निर्धारित चार शरण ही लेना, यह भी एक साधना का सूत्र है, एक सीमाकरण है, इच्छा-परिमाण है।

नमस्कार महामंत्र को यदि परम आध्यात्मिक दृष्टि से जपा जाए तो आत्मशुद्धि के लिए लाभदायी, अगली गति के लिए लाभदायी और योगों को एकाग्र करने में लाभदायी होता है।

तीन याम

ठाणं में बताया गया है— **तओ जामा पण्णत्ता, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे।** (3/161)

याम तीन हैं—

1. प्रथम याम, 2. मध्यम याम, 3. पश्चिम याम।

याम शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। आचार्य हेमचंद्र ने 'अभिधान चिंतामणि' में याम का अर्थ किया है—एक प्रहर। याम शब्द का दूसरा अर्थ मिलता है—दिन का एक तिहाई भाग और रात्रि का एक तिहाई भाग। यदि दिन को तीन भागों में विभक्त किया जाए तो सूर्योदय से ग्यारह बजे तक दिन का पहला भाग हो गया, ग्यारह बजे से तीन बजे तक दिन का दूसरा भाग हो गया और तीन बजे से सूर्यास्त तक दिन का तीसरा भाग हो गया अर्थात् सुबह, दोपहर, शाम—ये दिन के तीन भाग हो गए। इसी प्रकार रात्रि के भी तीन भाग किए जा सकते हैं—पूर्व रात्रि, मध्य रात्रि और पश्चिम रात्रि। दिन और रात्रि के ये तीन-तीन भाग याम के आधार पर किए गए।

याम का तीसरा अर्थ मिलता है— जीवन के तीन भाग। मनुष्य जीवन के तीन भाग होते हैं—प्रथम याम, मध्यम याम और पश्चिम याम। सामान्य भाषा में बचपन, यौवन और बुढ़ापा। जीवन के ये तीनों भाग वर्षों के आधार पर व्याख्यायित किए गए हैं। जीवन के आठ वर्ष से तीस वर्ष तक की जो अवस्था है, वह जीवन का प्रथम याम है। यहाँ जो याम शब्द आया है, वह धर्म-प्रतिपत्ति के प्रसंग में आया है। तीस वर्ष से साठ वर्ष तक का जीवन मध्यम याम है और साठ वर्षों से फिर आगे का सारा जीवनकाल पश्चिम याम कहलाता है।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अगस्त 2026
सप्ताह के विशेष दिन

17 अगस्त
भगवान अरिष्टनेमि च्यवन कल्याणक

18 अगस्त
भगवान अरिष्टनेमि दीक्षा कल्याणक

20 अगस्त
भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण कल्याणक

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

तुलसी जैसे संत पुरुष

● साध्वी कार्तिकप्रभा ●
● साध्वी चिंतनप्रभा ●

वर्धापन युवराज तुम्हारा, देते आज बधाई हैं,
जन-जन के मन में छाया हर्ष, ठाण में खुशियाँ छाई हैं।

महावीर मुनि से मुख्य मुनि, मुख्य मुनि से युवराजा,
दायित्व की चादर ओढ़ाई, बने महाश्रमण गण के राजा।
दशों दिशाएँ हर्षित हैं, कण-कण में खुशियाँ छाई हैं।

सवाईमल के लाल लाडले, जबरी देवी माता हैं,
महाप्रज्ञ संयम के दाता, महाश्रमण निर्माता हैं।
विनम्रता और सहजता से, गुरु के दिल में जगह बनाई है।

अप्रमत्त स्थितियोगी हो तुम, श्रेष्ठ श्रुताराधक तुम हो,
बहुश्रुत परिषद के संयोजक, गुरु-इंगित आराधक हो।
शत-शत नमन तेरे चरणों में, जागी तेरी पुण्याई है।

आओ महावीर पुकार—गुरु ने कैसा भव्य नजारा था,
तेरापंथ के युवराज को दूर से ही निहारा था।
स्वर्णिम अवसर हमें मिला था, गुरु ने कृपा कराई है।

नवम् युवराज को वंदन

● साध्वी मुक्ता प्रभा ●

नव्य, भव्य, अप्रतिम प्रतिभा को वंदन,
अनुपम, अद्वितीय प्रभा को वंदन।
असाधारण शुभंकर प्रज्ञा को वंदन,
अनुत्तर समत्व भाव को वंदन,
अनुत्तर उपशम भाव को वंदन।।१।।

आपश्री की आगम वाचना शैली को वंदन,
आपकी अप्रमत शैली को वंदन
आपकी गायन शैली को वंदन,
आपकी श्रोतरस शैली को वंदन,
आपकी प्रवचन शैली को वंदन।।२।।

आपकी कर्मठता, कार्यकुशलता को वंदन,
आपकी ऋजुता, मृदुता को वंदन
आपकी पवित्रता, निर्मलता को वंदन,
आपकी सहजता, सौम्यता को वंदन,
आपकी गंभीरता, पापभीरूता को वंदन।।३।।

आपके मनोबल, आत्मिक बल को वंदन,
आपके धृतिबल, संकल्प बल को वंदन।
आपके श्रद्धाबल, आस्थाबल को वंदन,
आपकी साधना, आराधना को वंदन,
आपकी उपासना, पुनीत भावना को वंदन।।४।।

आई दीवाली गण में, खुशियां छाई कण-कण में

● साध्वी उज्ज्वलरेखा ●

आई दीवाली गण में, खुशियां छाई कण-कण में,
केसर बरसे मधुवन में, उजली-उजली भोर।।

धोरो की धरती में जन्मे, गण प्रांगण में फले-फूले,
विनय समर्पण से पग-पग पर, सतरंगे शतदल खिले।
दसों दिशाएं विहंस उठी, हर मानस हर्ष विभोर ।।

पारखी नज़रे ज्योतिचरण की, ढूंढ निकाला कोहिनूर,
संघ भाल पर युगों-युगों, आलेख लिखे नूतन भरपूर।
युवराज के राजतिलक से, निश्चिंत बने सिरमौर ।।

बहुश्रुत साधक, श्रुत आराधक, ऋजुता-मृदुता है साकार,
महाप्रज्ञ-सी प्रज्ञा पाए, महाश्रमण श्रम के अवतार।
बनो चिरायु, रहो निरामय, यश सुरभि चहुं ओर ।।

तर्ज - भारत के नौजवानों...

शम, सम और श्रम के दिव्य त्रिवेणी संगम है : युवाचार्य श्री महावीर

● मुनि दीप कुमार ●

भारतीय ऋषि-परम्परा में महापुरुषों का मूल्यांकन उनके पद से नहीं, अपितु उनके तप, त्याग, ज्ञान, विनय और चरित्र की ऊँचाइयों से किया जाता है। जैन श्रमण संस्कृति ने भी सदैव ऐसे ही व्यक्तित्वों को आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित किया है, जिनके जीवन में शम, सम और श्रम का त्रिवेणी-संगम साकार हुआ हो। तेरापंथ धर्मसंघ के युवाचार्यश्री महावीर ऐसे ही तेजस्वी, तपोनिष्ठ, श्रुतसमृद्ध और विनयविभूषित व्यक्तित्व हैं। उनके व्यक्तित्व का अवलोकन करते हुए सहज ही यह अनुभूति होती है कि वे श्रमण परम्परा की उज्ज्वल साधना-धारा के सशक्त संवाहक हैं। युवाचार्यश्री महावीर सम, शम और श्रम के दिव्य त्रिवेणी-संगम हैं।' यह केवल प्रशंसात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उनके संपूर्ण साधनामय जीवन का यथार्थ मूल्यांकन है। 'शम' जैन दर्शन में केवल मानसिक शांति का पर्याय नहीं, अपितु कषायों के उपशमन, आत्मपरिणामों की निर्मलता और चित्त की स्थिरता का द्योतक है। युवाचार्यश्री महावीर ने कठोर तप, गहन स्वाध्याय, आत्मानुशासन और निरंतर साधना के माध्यम से इस उपशमभाव को अपने व्यक्तित्व का सहज संस्कार बना लिया है। उनके मुखमंडल पर विराजमान शांति, व्यवहार में झलकती सरलता और निर्णयों में प्रतिबिंबित संतुलन इस तथ्य की साक्षी है कि साधना उनके लिए केवल उपदेश का विषय नहीं, अपितु जीवन का प्राणतत्त्व है। समता युवाचार्यश्री के व्यक्तित्व का प्राण है। जैन आगमों में समता को धर्म का सार कहा गया है। सुख-दुःख, लाभ-अलाभ, मान-अपमान तथा अनुकूलता-प्रतिकूलता जैसे द्वंद्वों के मध्य भी जो साधक आत्मस्थिति बनाए रखता है, वही वास्तविक अर्थों में समत्वयोगी होता है। युवाचार्यश्री का शांत, प्रसन्न, निर्विकार एवं सदैव सौम्य व्यक्तित्व इस समत्व साधना का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उनकी सहज मुस्कान बाह्य विनम्रता नहीं, अपितु अंतःकरण में प्रतिष्ठित आत्मसमत्व की दिव्य अभिव्यक्ति है। श्रम युवाचार्यश्री के व्यक्तित्व का स्पंदित जीवन-सूत्र है। श्रमण परम्परा में श्रम का तात्पर्य केवल शारीरिक परिश्रम नहीं, बल्कि आत्मोत्कर्ष के लिए किया जाने वाला अखंड पुरुषार्थ है। सतत स्वाध्याय, अनुशासन, संघकार्य, आगम-अनुशीलन, चिंतन-मनन तथा साधना के प्रति उनकी अविचल निष्ठा यह सिद्ध करती है कि महानता संयोग से नहीं, बल्कि निरंतर पुरुषार्थ से अर्जित होती है। उनका जीवन इस सत्य का सजीव प्रमाण है कि साधना का प्रत्येक शिखर श्रम की सीढ़ियों से ही प्राप्त होता है। युवाचार्यश्री के व्यक्तित्व में शील और श्रुत का मणिकांचन-संयोग विलक्षण रूप से विद्यमान है। वे जितने गंभीर श्रुताराधक हैं, उतने ही उत्कृष्ट साधक भी हैं। आगमिक अध्ययन की गहनता, तत्त्वचिंतन की प्रखरता, व्याख्यान की तार्किकता तथा अभिव्यक्ति की ओजस्विता उन्हें समकालीन श्रमण परम्परा में विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। उनकी विद्वत्ता में अहंकार का लेश नहीं, अपितु विनय की सौम्यता और आत्मीयता का मधुर स्पर्श है। इसी कारण उनका ज्ञान केवल बुद्धि को नहीं, हृदय को भी आलोकित करता है। युवाचार्यश्री की वाणी में शास्त्र का प्रमाण, अनुभव की प्रामाणिकता और साधना की ऊष्मा का अद्भुत समन्वय है। उनके प्रवचन केवल वैचारिक विमर्श नहीं, बल्कि आत्मजागरण का मंगल आह्वान हैं। वे श्रोताओं को धर्म का बौद्धिक परिचय भर नहीं देते, बल्कि धर्म को जीवन में उतारने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। उनकी प्रत्येक वाणी आत्मशोधन, संयम, करुणा, अनेकांत और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा का संदेश देती है। युवाचार्यश्री की विनय, समर्पण और गुरु-निष्ठा उन्हें विशिष्ट बनाती है। जैन परम्परा में कहा गया है—'विणओ सासणे मूलं' अर्थात् विनय ही शासन का मूलाधार है। युवाचार्यश्री ने इस सिद्धांत को केवल स्वीकार नहीं किया, बल्कि अपने जीवन में पूर्णतः चरितार्थ किया है। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति उनकी अनन्य श्रद्धा, निष्कपट समर्पण और आज्ञापालन ने उन्हें गुरु-कृपा का अधिकारी बनाया है। उनका संपूर्ण जीवन इस तथ्य का प्रमाण है कि महान नेतृत्व अधिकार से नहीं, बल्कि सेवा, साधना, समर्पण और विनम्रता से अर्जित होता है। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा युवाचार्यश्री महावीर को युवाचार्य पद पर मनोनीत किया जाना तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास की एक दूरदर्शी, युगानुकूल और प्रेरणास्पद घटना है। यह निर्णय केवल उत्तराधिकार की औपचारिक घोषणा नहीं, बल्कि तप, त्याग, पात्रता, प्रज्ञा और साधनामय नेतृत्व की सार्वजनिक प्रतिष्ठा है। इससे सम्पूर्ण धर्मसंघ में नवविश्वास, नवचेतना और नवसंकल्प का संचार हुआ है। यह विश्वास दृढ़ हुआ है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के दिव्य मार्गदर्शन में युवाचार्यश्री महावीर धर्मसंघ की गौरवशाली परम्पराओं को अक्षुण्ण रखते हुए उन्हें नवीन युग की आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक प्रभावशाली स्वरूप प्रदान करेंगे। हम मंगल कामना करते हैं कि युवाचार्यश्री महावीर निरोग, निरामय, दीर्घायु एवं अखण्ड साधनामय जीवन से धर्मसंघ का ऊंचाईयां प्रदान करते रहें। उनके प्रज्ञामय चिंतन, तपोदीप्त साधना, करुणामयी दृष्टि और प्रेरणादायी व्यक्तित्व से अनंत साधक धर्म, संयम और आत्मकल्याण की दिशा में अग्रसर हों। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी और युवाचार्यश्री महावीर की यह दिव्य गुरु-शिष्य परम्परा धर्मसंघ, राष्ट्र और समस्त मानवता के लिए चिरकाल तक मंगल, नैतिकता और आध्यात्मिक आलोक का अक्षय स्रोत बनी रहे।

गण के युवराज तुम्हारा अभिनंदन

● साध्वी पुण्ययशा ●

गण के युवराज तुम्हारा अभिनंदन
जय जय छगनी नंदन सविनय वंदन।

सतरंगी यह भोर निराली अवनि अंबर हरषाये
बाजे नंदीघोष चहुँ दिशि स्वस्तिक शुभम रचाये
महाप्रज्ञ महाश्रमण की अभिनव कृति को आज बधाएं
उतरे खरे कसौटी पर तुम सच दी दिव्य ऋचाएं
दसों दिशाएं तुम्हें बधाती नमते सुरनर जन-जन।।

गुरुद्वय की पाई तुमने कृपा दृष्टि भारी
प्रकृति भद्र सुविनीत सेवाभावी शिष्य आज्ञाकारी
योगक्षेम वर्ष में बना अप्रतिम कीर्तिमान
आभा मंडल तेज तरुणिमा पौरुष पुण्यनिधान
मंगलमय ये शुभ क्षण करते सविनय वर्धापन

नई सदी के बाल सूर्य का करता गण सम्मान
तेरापंथ के शुभ भविष्य पर है सबको अभिमान
रहो निरामय चिरं जीवतु बांटो समता का संजीवन
पग पग पर जय विजय वरो हे गण के चंदन
रहे दिवाली सदा फले फूले भिक्षु शासन नंदन वन।।

नवम् युवराज को वंदन

● समणी मृदु प्रज्ञा ●

वंदना लो वंदना करते है अभिवंदना
जय-जय हो युवराज जय हो जय युवराज।

वर्धापना शुभकामना है गुरुदेव का सुन्दर चयन
महाश्रमण-महावीर जोड़ी बस गये सबके नयन
राम के हनुमान तुम गुरुदेव के अरमान तुम
जय-जय हो युवराज।

आत्मानंद-सहजानंद संघ के तुम शान हो
गुरु-चरण-रज तिलक तेरा चमका तव भाल हो
जल त्रिवेणी अभिषेक हो चंदन-कुमकुम लेप हो
आरती करूँ युवराज, बधाई हो तुम्हें आज।।
जय-जय हो युवराज...।।

लय - जय हो युवराज...

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

अलौकिक बालक महावीर के उत्कर्ष जीवन पोथी की कहानी

● साध्वी राकेशकुमारी 'बायतू' ●

1. युवाचार्य पद मनोनयन की ऐतिहासिक घोषणा

१. पावन प्रसंग व उपस्थिति : लाडनूं की पावन धरा पर, जैन विश्व भारती के पवित्र विशाल प्रांगण में आयोजित योगक्षेम के पावन अवसर पर, भिक्षु त्रिशताब्दी समापन के प्रसंग पर सैकड़ों-सैकड़ों साधु-साध्वियों और हजारों-हजारों श्रावक समाज की समुपस्थिति।

२.घोषणा की तिथि : युग प्रधान संघ शिरोमणि आ. श्री महाश्रमणजी ने ता. 27-7-2026 (वि.सं. आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी) को यह घोषणा की।

३. ऐतिहासिक निर्णय : तेरापंथ के आईने में एक स्वर्णिम इतिहास का अध्याय जोड़ते हुए, आचार्य-युवाचार्य की गरिमामय, गौरवशाली, स्वस्थ, शालीन व प्रभावी परम्परा को सुरक्षित रखते हुए तथा धर्मशासन में नया कीर्तिमान स्थापित करने हेतु मुनि महावीरकुमारजी (मुख्य मुनिप्रवर) को अपने उत्तराधिकारी पद की घोषणा करते हुए युवाचार्य पद पर मनोनीत कर तेरापंथ धर्मसंघ को निश्चिन्त व भाग्यशाली बना दिया!

४. उल्लास व जयघोष : दूरद्रष्टा आचार्य महाश्रमण ने पारगामी सोच से तराशे हुए उत्तराधिकारी का चयन कर जब सुशोभित किया, उस समय सुधर्मा सभा समवसरण शंखनाद व जयनारों के बुलन्दी घोषों से सम्पूर्ण धरा गूंज उठी। ऐसा लग रहा था देवगण भी अपनी खुशी अभिव्यक्त कर रहे हों!

५. इतिहास का पुनरावर्तन : जिस प्रकार आचार्य तुलसी ने मुनि नथमलजी (महाप्रज्ञजी) को युवाचार्य पद और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुनि महाश्रमण को युवाचार्य पद पर अलंकृत किया था, उसी इतिहास का पुनरावर्तन करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने मुनि महावीरकुमार (मुख्यमुनि) को युवाचार्य पद पर परिस्थापित कर तेरापंथ धर्मसंघ को चिरंजीवी व धन्य बना दिया। युवाचार्यश्री के भाग्य का अभ्युदय होते ही तेरापंथ धर्मसंघ का भाग्योदय हो गया।

2. आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता एवं मंगल भावनाएँ :

१.अभिवंदना : मैं आचार्यप्रवर के अलौकिक, विलक्षण चिंतन, विलक्षण निर्भय निर्णायक शक्ति और विलक्षण उत्तराधिकारी के मनोनयन की इस धमाकेदार घोषणा की अभिवंदना करती हूँ; यह संपूर्ण भविष्य का अमल-धवल शुभ दस्तावेज है।

२. आनंद का माहौल : संपूर्ण संघ दिव्य ज्योतिर्धर कालजयी व्यक्तित्व के प्रति वंदना-अभिवंदना करता हुआ खुशियों की सौगात पाकर प्रमुदित, पुलकित व प्रफुल्लित है।

३. शुभकामना : हर्षोल्लास के इन अनमोल क्षणों में यही मंगल कामना करते हैं कि यह उर्ध्वारोहण की अलौकिक यात्रा गुरु दृष्टि का आराधन करती हुई साधना पथ पर निरन्तर गतिमान बनी रहे।

3.मुनि महावीरकुमारजी का गुरु-सेवा काल व विभिन्न पद

१. सेवा साधना : अनन्त-अनन्त आस्था के धाम आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुनि महावीरकुमार पर कृपा प्रसाद बरसाते हुए अनेक नये पदों से नवाजा है। वर्षों तक मुनि महावीर आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की लगननिष्ठा, सेवाभाव, निष्ठाभाव व विनयभाव से तेल-मर्दन सेवा में संलग्न रहे।

२. विकास यात्रा : तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य महाप्रज्ञ व युवाचार्य महाश्रमण के श्रीचरणों में मुनि महावीरकुमार के विकास की जो यात्रा चली, वह अपने आपमें विलक्षण व अलौकिक है। दीक्षा लेते ही मुनि महावीर को आचार्यश्री ने युवाचार्य महाश्रमणजी को सौंपा। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने कसौटियों पर कसते हुए परीक्षाएं भी लीं।

३. प्राप्त दायित्व व उपलब्धियाँ:

2010: आचार्य श्री महाश्रमणजी के पत्र व संवाद सेवा में नियुक्ति।

2010: आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा समुच्चय शयन नियुक्ति।

2011: गीत गायन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। मुख्यमुनि महावीरकुमारजी के विशेष कार्यों और योग्यता से प्रसन्नमना आचार्य श्री महाश्रमण ने इनके लिए 'महावीर अष्टकम्' का निर्माण कर मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

2012 (26-12-12) : समीक्षा परिषद के सदस्य बनाये गये। केन्द्र में कल्याण परिषद, शताब्दी संगोष्ठी आदि सभी बैठकों में उपस्थित रहने का आदेश मिला।

2015: नव दीक्षित व बाल मुनियों के लिए संस्कार निर्माण का प्रभार सौंपा गया।

४. शैक्षणिक श्रेष्ठता : दीक्षा के पश्चात सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर 'श्रेष्ठ श्रुताराधक' के अलंकरण से विभूषित किया गया और साथ ही यूनिवर्सिटी में बी.ए. में टॉपर बन गोल्ड मेडल प्राप्त किया। इसके पश्चात् जैन विश्व भारती से एम.ए. का कोर्स सम्पन्न किया।

4.मुख्यमुनि पद पर प्रतिष्ठा एवं शिल्पी गुरु

१. गुणों की खान: मुनि महावीरकुमार ने निश्चलता, सरलता, विनम्रता, सेवाभावना, संघनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, गुरुनिष्ठा, आगमनिष्ठा, आचारनिष्ठा, अलौकिक समर्पणभाव, विलक्षण प्रतिभा, पुरुषार्थी श्रमशीलता आदि गुणों से आचार्य श्री महाश्रमणजी के दिल को जीतकर हृदय में स्थान जमाया।

२. मुख्यमुनि पद (2016) : अर्हताओं का मूल्यांकन करते हुए आचार्य महाश्रमण ने बरपथार गांव (आसाम) की धरा पर वि.सं. 2073 ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी (ता. 4-6-2016) को शिष्य मुनि महावीरकुमार को 'मुख्यमुनि' पद पर प्रतिष्ठित कर संघ के भविष्य का द्वार खोल दिया।

३. गुरुदेव के शब्द : उस समय आपश्री ने दो पदों का सृजन कर फरमाया— 'मैं अपने में 100% कर्ज महसूस करता था, तो मैं सोचता हूं कि मुनि महावीर को मुख्यमुनि और साध्वी सम्बुद्धयशा को 'साध्वीवर्या' पद पर पदासीन करके मैं 100% प्रतिशत तो अभी अपने को हल्का नहीं मानता हूं पर अगर भूल न करूं तो मैंने मेरा 90% प्रतिशत काम किया है। 90% हल्का हो गया हूं।'

४. शिल्पी गुरु : आ. महाश्रमणजी ने शिल्पीकार बन अनगढ़ पत्थर को मूर्ति का आकार दे शिव-शंकर बना दिया, हीरे को कोहिनूर बना दिया। गुरु महान-महानत्तम परोपकारी होते हैं; जिस पर गुरु की नजर पड़ जाती है, वह धन्य व निहाल हो जाता है। युवाचार्य महावीरकुमारजी गुणों के समवाय हैं; आपश्री के जीवन-पोथी का हर पन्ना उत्कर्ष से भरा हुआ है। गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा, आस्था, भक्तिभाव व विनयभाव से गुरु का विश्वास प्राप्त किया है; आचार्य श्री ने भी समय-समय पर मुनि महावीरकुमार का खूब मान-सम्मान बढ़ाया है।

5.साध्वीश्री की अनुभूति और बालक महावीर का बचपन

१.साध्वीश्री की प्रसन्नता: मुझे अत्यंत गौरव की अनुभूति हो रही है; अति उल्लास व प्रसन्नता से आनन्दित-आल्हादित हो उठी हूँ। हृदय-सागर में आनन्द का पारावार लहरा रहा है, सीना गौरव से गौरवान्वित हो रहा है, मन मयूर नाच रहा है। जिस बालक महावीर को दीक्षा के लिए तैयार किया, दीक्षा दिलाने तक पूरी पृष्ठभूमि बना भूमिका निभाई, वह आज धर्मसंघ के भाल पर चमक-दमक रहा है। कण-कण में अपूर्व हर्षोल्लास है।

२.बालक के नैसर्गिक गुण: बालक महावीर को बचपन से ही मैंने जाना, पहचाना व परखा है। ये प्रतिभा सम्पन्न, मेधावी, तीक्ष्ण बुद्धि के धनी थे। सहज सरलता, विनम्रता, नम्रता, संगीतप्रियता आदि इनके नैसर्गिक गुण थे।

6. प्रथम मिलन एवं वैराग्य के संस्कारों का बीजारोपण

१. प्रथम मिलन (सन 1999): मैं सन 1999 का बायतू चातुर्मास परिसम्पन्न कर चौखले का परिभ्रमण करते हुए फलसुंड गई। स्वरूपचन्दजी सवाईचन्दजी कोचर के निवास स्थान (महावीर मुनि का निवास स्थान) दुकान में रहना हुआ; शैयातर का लाभ मिला। महावीर लगभग 9-10 वर्ष का बच्चा था पर संस्कारी था, अच्छी सेवा करता था

२. वैराग्य का अंकुरण : मैंने बालक महावीर पर ध्यान केन्द्रित किया; भक्तामर, पच्चीसबोल आदि कण्ठस्थ भी कराए। दो महीने के प्रवास काल में बालक महावीर के दिल में वैराग्य का बीज प्रस्फुटित हुआ। त्याग, प्रत्याख्यान व तपस्या का अच्छा माहौल बना; जैन व अजैन समाज में धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई।

३. द्वितीय प्रवास (सन 2000) : आ. महाप्रज्ञ द्वारा घोषित सन 2000 का चातुर्मास बाड़मेर शहर में सम्पन्न कर चौखले की ओर विहार किया। चौखले के क्षेत्रों में धर्म जागरण करते हुए फिर फलसुंड जाना हुआ; इस बार जेठमलजी कोचर को शैयातर का लाभ मिला।

४. कठिन साधना : मेरा तो एक ही लक्ष्य था—बालक महावीर के वैराग्यभाव को सिंचन कर परिपुष्ट करना। एक छोटे से कमरे में रहना हुआ, जहाँ चार साध्वियां भी कठिनाई से सो पाती थीं। आने वालों को आश्चर्य होता कि इतने छोटे से कमरे में साध्वीश्री कैसे रहते होंगे; पर गुरु कृपा से प्रसन्नमन रहते। तीनों टाइम प्रवचन होता, पता ही नहीं चलता कैसे समय बीत जाता।

५. होनहार बालक की पहचान : बालक महावीर में छिपी अर्हता को मैंने जाना-पहचाना। कई बार परिवार (पिताजी सवाईचन्दजी आदि) को समझाते हुए मैं कहती—

होनहार महावीर है, विनय विवेक प्रवीण
कुल का नाम रोशन करेगा, वैराग्यभाव में लीन॥

६. संस्कार व लक्ष्य : बचपन से महावीर स्थिरयोगी, स्थितप्रज्ञ था। यह अपने नाम को सार्थक करेगा, ऐसा लगता है महावीर ही बनेगा; मेधावी, तीक्ष्ण बुद्धि सम्पन्न, विनय-विवेकी, समझदार व सुसंस्कारी बालक है। मुझे तो ऐसा भी लगता है कि विशिष्ट बनेगा, होनहार है। महावीर को मैं 'वैरागी मुमुक्षु' नाम से ही पुकारती थी। जनता में भी यही चर्चा चलती कि साध्वीजी महावीर को तैयार करने ही आये हैं। सिंवाची-मालाणी से भी लोग आते रहते, उन्हें मैं कहती—यह वैरागी है, दीक्षा लेगा।

७. संघीय संस्कार : मेरा एक ही लक्ष्य था—इस एरिया के बालक महावीर को तैयार कर दीक्षा दिलाना। मां, सवाईचन्दजी, बड़े पापा स्वरूपचन्दजी को भी आज्ञा के लिए समझाती रहती। महावीर को संघीय संस्कार देने, सिखाने व वैराग्यभाव को पुष्ट करने हेतु लक्ष्यपूर्वक पीछे लगी रहती। जनता में दान, शील, तप, श्रद्धा व आस्था की अत्यधिक अभिवृद्धि हुई। तीन महीने रहना हुआ; मर्यादा महोत्सव हुआ और सभी ने अच्छा लाभ उठाया।

7.गंगाशहर मर्यादा महोत्सव एवं ऐतिहासिक फलसुंड चातुर्मास

१.गंगाशहर में बाल मुमुक्षु की प्रस्तुति (2001): मर्यादा महोत्सव गंगाशहर के पावन प्रसंग पर आचार्य महाप्रज्ञजी और युवाचार्य महाश्रमणजी के श्रीचरणों में 2001 के साधु-साध्वियों के चातुर्मास हेतु ससंघ फलसुंड को पूरी तैयारी के साथ गीतिका बनाकर महावीर आदि श्रावकों को तैयारी कराकर भेजा। मैंने महावीर से कहा— 'महावीर तू मुमुक्षु है, दीक्षा के लिए तैयार है, गुरुदेव के चरणों में भावना रख लेना कि मेरा दीक्षा लेने का भाव है।' पिताजी को भी मैंने यही बात कही कि निवेदन कर देना।

(शेष अगले अंक में)

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
17 अगस्त - 23 अगस्त 2026

आत्म-कल्याण का एक विशेष और स्वर्णिम अवसर चातुर्मास

पीतमपुरा, दिल्ली।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती, बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी (ठाणा-3) का मंगल चातुर्मासिक प्रवेश अत्यंत उल्लास और भव्यता के साथ संपन्न हुआ।

'पर्यावरण विशुद्धि यात्रा' के रूप में जब यह विशाल और अनुशासित काफिला पीतमपुरा स्थित चातुर्मास स्थल पर पहुँचा, तो समारोह का शुभारंभ पीतमपुरा की बहनों द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। इसके पश्चात् पीतमपुरा और दिल्ली सभा के भाइयों, शालीमार बाग़ की बहनों तथा ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा सुमधुर स्वागत गीत प्रस्तुत किए गए।

कार्यक्रम में 6 वर्षीय बालक हर्षित छाजेड़ ने भी अपनी मनमोहक प्रस्तुति दी। इन सभी भावपूर्ण प्रस्तुतियों के माध्यम से मुनिश्री के प्रति अगाध श्रद्धा निवेदित की गई। इस अवसर पर मुनि ज्योतिर्मय जी ने अपने प्रासंगिक एवं सारगर्भित विचार श्रोताओं के समक्ष रखे।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी ने अपने पावन उद्बोधन में कहा– 'यह द्विमासिक चातुर्मास हम सभी के लिए आत्म-कल्याण का एक विशेष और स्वर्णिम अवसर है।

मैं आप सभी को यही कहूंगा कि इस अवधि में अपने भीतर झांकें और अपनी त्याग व तपस्या के अर्घ्य चढ़ाएं। धर्म, संयम और साधना के मार्ग में कभी भी अपनी 'शक्ति का संगोपन' न करें। अपनी क्षमताओं को छिपाएं नहीं, बल्कि अपनी पूर्ण ऊर्जा, भाव और सामर्थ्य के साथ आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में आगे बढ़ें।'

इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोगों ने मुनिश्री के अभिनंदन में अपने विचार रखें, जिनमें आचार्य महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष के. एल. जैन पटावरी, जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, तेरापंथ सभा दिल्ली अध्यक्ष बिमल बैंगानी, तेरापंथी सभा पीतमपुरा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया, दिल्ली ज्ञानशाला संयोजक अशोक सेठिया, ते.यू.प.दिल्ली अध्यक्ष मनीष महनोत तथा ते.यू.प. गांधीनगर से क्रांति बरड़िया।

इसके साथ ही तेरापंथ महिला मंडल उत्तर, मध्य और पश्चिम दिल्ली की अध्यक्षाएँ क्रमशः इंद्रा सुराणा, कनक चोपड़ा और चंदा डूंगरवाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

प्रवेश से पूर्व पर्यावरण विशुद्धि यात्रा की भव्य रैली के सुव्यवस्थित संयोजन में अरुण सेठिया का अहम योग रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन पीतमपुरा सभा के मंत्री वीरेंद्र जी जैन ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

ना डिग्री का काम...

सेवा दायित्व समझकर नहीं, बल्कि पूरे उत्साह और भाव के साथ होनी चाहिए।

२. छोटे-बड़े का विवेक : छोटे युवाओं को बड़ों के प्रति सदैव विनय भाव रखना चाहिए, वहीं बड़ों को भी छोटों की बात ध्यान से सुननी चाहिए। तेरापंथ धर्मसंघ में पाक्षिक (पक्खी) के दिन वंदना करने और परस्पर 'खमत-खामणा' (क्षमापना) करने की विशेष और विलक्षण परंपरा है।

'शुश्रुषा से क्या मिलेगा?': दुर्गति से बचाव और महान उपलब्धियां:

१. बिना डिग्री के सबसे बड़ी उपलब्धि : शुश्रुषा से जीवन में 'विनय' का प्रादुर्भाव होता है। भले ही कोई शैक्षणिक डिग्री मिले या न मिले, लेकिन विनयशील बनना जीवन की सबसे बड़ी आध्यात्मिक उपलब्धि है।

२. बल, बुद्धि और यश की वृद्धि : आगम और शास्त्रों में कहा गया है कि जो अभिवादनशील और विनययुक्त होता है, उसके आयुष, बल, बुद्धि और यश में निरंतर वृद्धि होती है।

३. दुर्गति से बचाव और सुकुल की प्राप्ति : विनयप्रतिपन्न (विनयशील) व्यक्ति कभी किसी की अवज्ञा या आशातना नहीं करता। ऐसा साधक नरक गति, तिर्यंच गति तथा देव व मनुष्य की दुर्गति में जाने से स्वयं को रोक लेता है। आगामी जन्म में भी उसे उत्तम कुल (सुकुल) की प्राप्ति होती है और वह समाज में अत्यंत लोकप्रिय बनता है।

प्राण रहे या जाए...

ऐसा जीव अगार (गार्हस्थ्य) जीवन का परित्याग कर अणगार (साधु) धर्म स्वीकार कर लेता है और संयम मार्ग पर अग्रसर होता है।

३.अव्याबाध सुख की प्राप्ति: धर्म-श्रद्धा का प्रगाढ़ चिंतन साधक को संसार के समस्त दुःखों से मुक्त कर देता है, जिससे वह अंततः मोक्ष के अक्षय और अव्याबाध परम सुख को प्राप्त कर लेता है।

प्रातःकालीन दिनचर्या और गृहस्थ धर्म का पावन संदेश–

१. प्रातःकालीन साधना का नियमः पूज्यश्री ने दैनिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण प्रेरणा देते हुए कहा कि सुबह सामायिक की साधना बहुत उत्तम है। जहाँ तक संभव हो, प्रातः नाश्ता करने या मुख में पानी लेने से पहले कम से कम एक माला नवकार जप अवश्य पूर्ण हो जानी चाहिए। सामायिक की विधिः सामायिक के दौरान स्वाध्याय, जप और चौबीसी व गीतिकाओं का संगान किया जा सकता है।

इस दौरान मन, वचन और काया की अशुभ योग वाली प्रवृत्तियों पर पूर्ण विराम रहना चाहिए।

२. देव, गुरु व धर्म पर अडिग आस्था : गृहस्थों के लिए संदेश देते हुए आचार्यश्री ने कहा कि—'अर्हत् मेरे देव हैं, शुद्ध साधु मेरे गुरु हैं और जिनवाणी मेरा सिद्धांत है।' कैसी भी विपरीत परिस्थिति आए, अहिंसा, सत्य और ईमानदारी के प्रति श्रद्धा कभी डगमगानी नहीं चाहिए

चारित्रात्माओं को सम्बोधन–

अंतिम श्वास तक संयम निष्ठाः पूज्यश्री ने साधु-साध्वियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि अंतिम श्वास तक साधुपना अक्षुण्ण रहे और सम्यक् दर्शन स्थायी बना रहे।

संघ जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव में भी संयम और साधना के प्रति निष्ठा बनी रहनी चाहिए।

बोलती किताब

आस्थोपनिषत्

आस्था, अहिंसा और प्रेरणामयी व्यक्तित्व का अनुपम ग्रंथ

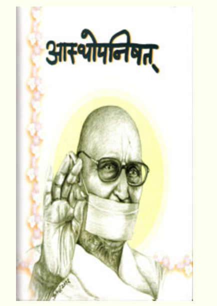

आचार्य महाप्रज्ञ के विराट व्यक्तित्व, उनके जीवन-दर्शन और मानवता के प्रति उनके अविस्मरणीय योगदान का प्रेरक संकलन है। इस ग्रंथ में देश-विदेश के धर्मगुरुओं, विचारकों, राजनेताओं और समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा व्यक्त श्रद्धांजलियों के माध्यम से आचार्यश्री के बहुआयामी व्यक्तित्व का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक पाठक को आस्था, करुणा और आध्यात्मिक चेतना से जोड़ती है।

इस पुस्तक में आचार्य महाप्रज्ञ के अहिंसा, प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत और नैतिक जीवन संबंधी अवदानों को सरल एवं प्रेरक शैली में प्रस्तुत किया गया है। उनके विचार बताते हैं कि आत्मानुशासन, संयम और सकारात्मक चिंतन के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को अधिक सार्थक, संतुलित और शांत बना सकता है। यह कृति केवल श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाला प्रेरक दस्तावेज है।

आस्थोपनिषत् यह संदेश देती है कि महान व्यक्तित्व अपने विचारों और आदर्शों के माध्यम से सदैव जीवित रहते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ का साहित्य, साधना और मानव कल्याण के प्रति समर्पण आज भी समाज को सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता और नैतिक मूल्यों की ओर प्रेरित करता है। यह ग्रंथ उनके जीवन-दर्शन को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

यह कृति शोधार्थियों, अध्येताओं, साधकों तथा आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए समान रूप से उपयोगी है। पुस्तक का प्रत्येक अध्याय आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों, कार्यों और प्रेरणाओं से परिचित कराते हुए पाठक में आत्मविकास, मानवीय संवेदनाओं और मूल्यनिष्ठ जीवन के प्रति नई चेतना का संचार करता है। आस्थोपनिषत् एक प्रेरणास्पद, संग्रहणीय और चिंतनशील ग्रंथ है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

मंत्र दीक्षा समारोह का सफल आयोजन

फरीदाबाद।

कार्यक्रम का पावन सान्निध्य साध्वी लब्धि प्रभा जी ठाणा-3 का प्राप्त हुआ। उनके मंगल सान्निध्य में 12 बालकों एवं बालिकाओं ने जैन परंपरा के अनुसार महामंत्र की दीक्षा ग्रहण की। साध्वी श्रीजी ने अपने प्रेरक प्रवचनों में मंत्र दीक्षा के आध्यात्मिक, नैतिक एवं संस्कारात्मक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बचपन में प्राप्त होने वाले श्रेष्ठ संस्कार व्यक्ति के संपूर्ण जीवन का आधार बनते हैं। उन्होंने बच्चों एवं अभिभावकों को नियमित मंत्र-जाप, स्वाध्याय एवं सदाचार को जीवन का अभिन्न अंग बनाने की प्रेरणा प्रदान की। मंत्र दीक्षा ग्रहण करने वाले सभी बच्चों का मंगलकामनाओं के साथ अभिनंदन किया गया। तेरापंथ युवक परिषद्, फरीदाबाद के पदाधिकारियों ने बताया कि परिषद् का उद्देश्य बाल पीढ़ी में धार्मिक संस्कार, आध्यात्मिक चेतना एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना है। इसी उद्देश्य से समय-समय पर ऐसे संस्कारमय कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

कोटि कोटि वंदन-अभिनंदन

गुरुवर महाश्रमण कृपा से, किया है शिखर पर आरोहण।
उपहार संघ को दिया प्रभु ने, जय हो, जय हो महाश्रमण ॥

: श्रद्धाप्रणत :

सूरजमल-गीतादेवी सूर्या
दिनेश-पिस्ता, संजय-संगीता
नरेन्द्र-चंचल, राकेश-भाग्यश्री सूर्या
धुलिया (महाराष्ट्र)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 अगस्त - 23 अगस्त 2026

चादर धवल ओढ़ाई प्रभु ने, सीन निहारा मनहारी।
सक्षम कंधों भार संघ का, इतिहास रचा जय-जयकारी।।

: श्रद्धाप्रणत :

शांतिदेवी-सम्पतमल नाहर

आडसर-निर्मली-यमुनानगर

अभिनंदन-वंदन स्वीकारो,
युवाचार्य 'महावीर'

'महाश्रमण' करुणा से गण की,
चमक रही तकदीर।।

: श्रद्धाप्रणत :

'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' सुमेरमलजी चोपड़ा परिवार

गंगाशहर-गुलाबबाग-यमुनानगर-अहमदाबाद

Metro Plywood Pvt. Ltd.

Yamunanagar

'सम्यक्त्व के बिना ज्ञान अज्ञान है, चारित्र के बिना मोक्ष असंभव': आचार्यश्री महाश्रमण

'बिना मोक्ष के निर्वाण कहां?' विषय पर पूज्य प्रवर ने दी पावन देशना; उपासक व प्रेक्षाध्यान शिविरार्थियों को दी उपसंपदा

लाडनूं।
04 अगस्त, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रातःकालीन मुख्य प्रवचन में 'बिना मोक्ष के निर्वाण कहां' विषय पर आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को अमृत देशना प्रदान की।

मोक्ष और निर्वाण की श्रृंखला (कार्य-कारण संबंध)–

१. **निर्वाण किसे?** जिसकी सकल कर्मों से मुक्ति (मोक्ष) हो जाती है, उसी को निर्वाण प्राप्त होता है।

२. **मोक्ष किसे?** जिसमें चारित्र गुण होता है, उसी का मोक्ष संभव है।

३. **चारित्र किसे?** जिसमें सम्यक् ज्ञान होता है, उसी में चरण/चारित्र गुण प्रकट होता है।

४. **सम्यक् ज्ञान किसे?** जो सम्यक् दर्शन (सम्यक् श्रद्धा) वाला होता है, उसी में सम्यक् ज्ञान होता है।

सम्यक्त्व के अभाव में स्थिति :

१. जो सम्यक् दर्शन से हीन है, उसमें सम्यक् ज्ञान नहीं हो सकता।

२. बिना सम्यक् ज्ञान के चारित्र गुण नहीं आ सकता, बिना चारित्र के मोक्ष नहीं हो सकता और बिना मोक्ष के निर्वाण प्राप्त नहीं हो सकता।

'दर्शन' शब्द के ६ अर्थ :

१. शास्त्र में 'दर्शन' के कई अर्थ बताए गए हैं–

१. देखना, २. नेत्र

३. सामान्य अवबोध, ४. दिखाना,

५. सिद्धांत और ६. श्रद्धा/आस्था।

२. यहाँ 'दर्शन' शब्द का प्रयोग 'श्रद्धा और आस्था' के संदर्भ में हुआ है।

सम्यक् दर्शन (कारण) और सम्यक् ज्ञान (कार्य) :

> सकल कर्म मुक्ति से ही संभव है निर्वाण की प्राप्ति
> –आचार्यश्री महाश्रमण

१. ज्ञान तो मिथ्यात्वी के पास भी हो सकता है, परंतु सम्यक्त्व के बिना वह 'अज्ञान' कहलाता है।

२. जैसे ही सम्यक्त्व आ जाता है, वही अज्ञान 'सम्यक् ज्ञान' में परिवर्तित हो जाता है।

चारित्र प्राप्ति के दो माध्यम (मरुदेवा माता का दृष्टांत) :

चारित्र दो प्रकार से आ सकता है–

१. विधिवत् प्रत्याख्यान/दीक्षा द्वारा।

२. चेतना की ऐसी परम विशुद्धि और मोहनीय कर्म के विलय से, जहाँ भावों में बिना बाह्य चारित्र ग्रहण किए भी केवलज्ञान/मोक्ष की स्थिति बन जाती है (जैसे मरुदेवा माता)।

दीक्षा की प्रक्रियाः

आचार्य प्रवर ने फरमाया कि दीक्षा सामान्यतः 'सामायिक चारित्र' से शुरू होती है । इसके पश्चात, निर्धारित कालावधि और पात्रता के आधार पर 'छेदोपस्थापनीय चारित्र' प्रदान किया जाता है।

अनिवार्यता नहीं : पूज्य प्रवर ने बताया कि 'छेदोपस्थापनीय चारित्र' मिलना अनिवार्य नहीं है, क्योंकि किसी विशेष परिस्थिति (जैसे वृद्ध साधक या संथारा) में केवल सामायिक चारित्र में भी जीवन का अवसान हो सकता है

गुरु और दीक्षा : 24 तीर्थंकरों के शासन में पहली बार दीक्षा लेने की व्यवस्था एक समान ही रहती है, जहाँ सामायिक चारित्र ही प्रथम सोपान होता है।

चारित्र वह ढाल, जो काट दे कर्मों का जाल : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य आचार्यश्री ने समझाई २५ बोल की गहराई; प्रेक्षाध्यान से मन को साधने की दी प्रेरणा

लाडनूं।
06 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, अखंड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन में 'क्या है चारित्र' विषय पर उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को पावन देशना प्रदान की।

> हमारी क्रियाएं भावपूर्ण हों, तो चलते, बोलते और सोते समय भी ध्यान और चारित्र का आनंद लिया जा सकता है
> —आचार्यश्री महाश्रमण

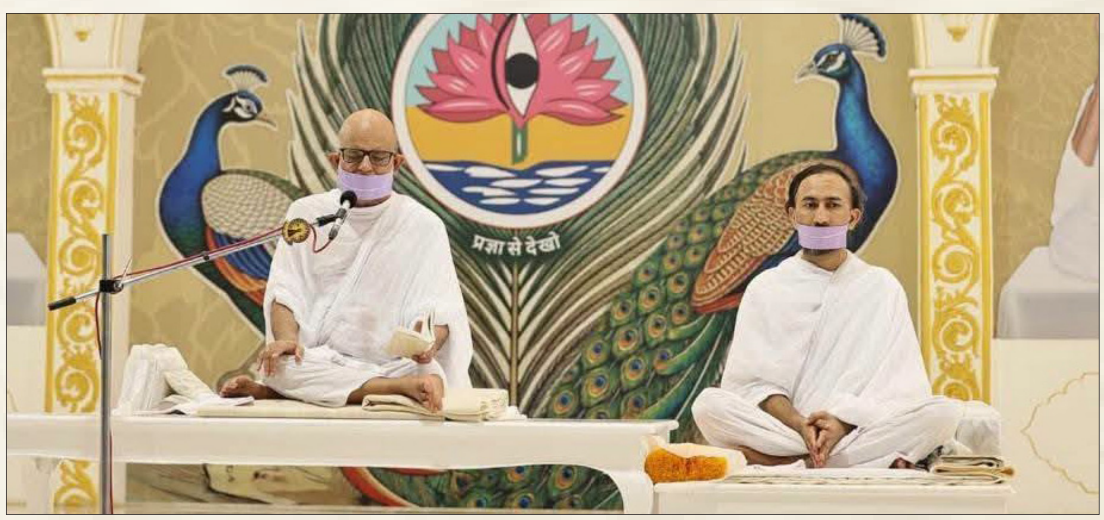

'क्या है चारित्र?': समता भाव और कर्म निर्जरा का मार्ग

१.चारित्र की मूल परिभाषा: मोक्ष मार्ग के चार अंगों में एक प्रमुख अंग 'चारित्र' है। समता भाव ही चारित्र है। महाव्रत, समितियां और गुप्तियां—इन सबका प्राण तत्व समभाव ही है। समभाव रहने पर अशुभ योग का अभाव होता है, और यही चारित्र है।

२. कर्म संचय को रिक्त करने का माध्यम : चारित्र नए कर्मों के आस्रव को रोकता है और शुभ योग से पूर्व संचित कर्मों की निर्जरा करता है। चारित्र के अंतर्गत ही 'तप' का समावेश होता है।

२५ बोल के आधार पर 'पांच चारित्र' का आगमिक विश्लेषण

१. सामायिक चारित्र : सर्व सावद्य योग (पाप व्यापार) का तीन करण, तीन योग से त्याग सामायिक चारित्र है। यह इत्वरिक (अल्पकालिक—७ दिन, ४ माह या ६ माह) एवं यावत्कथित (जीवनभर) दो प्रकार का होता है।

२. छेदोपस्थापनीय चारित्र : वर्तमान में भगवान महावीर की परंपरा में यह व्यवस्था है। मूल दीक्षा के प्रायः ७ दिनों बाद छेद (विभाग)पूर्वक त्याग करवाकर जो 'बड़ी दीक्षा' दी जाती है, वही छेदोपस्थापनीय चारित्र है।

३. परिहार विशुद्धि चारित्र : यह विशेष तपस्यात्मक साधना है, जिसमें ९ साधु मिलकर (४ तपस्वी, ४ सेवाभावी और १ वाचनाचार्य) ६-६ महीने के क्रम से कुल १८ महीने में साधना संपन्न करते हैं।

४. सूक्ष्म संपराय चारित्र : ९वें गुणस्थान में क्रोध, मान, माया के उपशांत या क्षीण होने पर भी १०वें गुणस्थान में सूक्ष्म लोभ शेष रहता है। यह १०वें गुणस्थान का चारित्र है।

५. यथाख्यात चारित्र : यह ११वें से १४वें गुणस्थान तक (छद्मस्थ एवं केवली दोनों अवस्थाओं में) होता है, जहाँ पूर्ण वीतरागता प्रकट होती है।

मन-वचन-काया की साधना और प्रेक्षाध्यान :

१. गुप्ति व तेरह नियम : साधु अपनी वचन गुप्ति, काय गुप्ति और मन की चंचलता को नियंत्रित कर चारित्र को निर्मल बनाए रखे। साधु के १३ नियमों के प्रति सजगता ही चारित्र का कवच है।

२. प्रेक्षाध्यान का संदेश : प्रेक्षाध्यान के माध्यम से मन की चंचलता को नियंत्रित किया जा सकता है। यदि क्रियाएं भावपूर्ण हों तो चलते, बोलते और सोते समय भी ध्यान की स्थिति निष्पन्न हो सकती है।

धन छूटे तो छूटे, धर्म पर न आए आंच! : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य आचार्यश्री ने प्रदान किए सम्यक्त्व रक्षा के ८ सूत्र; साध्वी राजीमती जी का ९४वां जन्मदिवस सम्पन्न

लाडनूं।
05 अगस्त, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन में 'सम्यक् दर्शन रहे सुरक्षित' विषय पर उत्तराध्ययन आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को पावन देशना प्रदान की।

> किसी भय या नुकसान के डर से अपनी धर्म-निष्ठा न छोड़ें; जहाँ निष्ठा और निर्भीकता है, वहीं सम्यक्त्व सुरक्षित रहता है
> —आचार्यश्री महाश्रमण

'सम्यक् दर्शन रहे सुरक्षित': आगम के आलोक में पावन देशना :

१. निश्चय सम्यक्त्व : चार अनंतानुबंधी कषाय और दर्शन मोह त्रिक—इन ७ प्रकृतियों के क्षय, उपशम या क्षयोपशम होने पर आत्मा में पूर्ण सम्यक्त्व प्रकट होता है। किसी भी संप्रदाय या वेश-परिवेश का व्यक्ति हो, सम्यक्त्व आते ही उसका एक निश्चित समय में मोक्ष जाना तय हो जाता है।

२. व्यवहार सम्यक्त्व : यथार्थ के प्रति श्रद्धा, संघ व संघपति के प्रति निष्ठा ही व्यवहार सम्यक्त्व है। 'अर्हत् मेरे देव, शुद्ध साधु मेरे गुरु और जिन-प्रज्ञप्त मेरा धर्म है'—यह निर्विवाद परिभाषा सर्वसम्मत है।

सम्यक् दर्शन को सुरक्षित रखने के ८ अंग :

१. निःशंकित (निर्भीकता): देव, गुरु व धर्म पर अवांछनीय शंका न करें। किसी भय या नुकसान के डर से धर्म की आस्था न छोड़ें। धन भले चला जाए, प्राण भले चले जाएं, पर धर्म न छूटे।

२. निकांक्षित : अन्य भौतिक चकाचौंध या कुमतों के प्रति आकर्षण न हो और न ही सांसारिक सुखों की आकांक्षा के लिए धर्म साधना करें।

३. निर्विचिकित्सा : धर्म के फल में संदेह न करें और मल-मूत्र आदि से घृणा न रखें।

४. अमूढ़ दृष्टि : मोहयुक्त दृष्टि न हो; राग-द्वेष युक्त देवजातियों के प्रति धार्मिक दृष्टि से आस्था न रखें।

५. उपगूहन : मृदुता, क्षमा, निष्छलता आदि गुणों को पुष्ट करना।

६. स्थिरीकरण : संयम धर्म में अस्थिर होते साधर्मिक को पुनः धर्म में स्थिर करने का प्रयास करना।

७. वात्सल्य : अहिंसा, धर्म और साधर्मिकों (साधु-साध्वियों) के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और सेवा-सहयोग का भाव रखना।

८. प्रभावना : उत्तम व्याख्यान, तत्व-निरूपण, संयम और तपस्या के द्वारा धर्म की प्रभावना करना।

वरिष्ठ साध्वी श्री राजीमती जी के ९४वें जन्मदिवस पर अभिवंदनः

१.आचार्यश्री का मंगल आशीर्वादः बहुश्रुत परिषद् की सदस्या साध्वी श्री राजीमती जी के ९३ वर्ष पूर्ण कर ९४वें वर्ष में प्रवेश पर पूज्य प्रवर ने फरमाया कि—'यह एक बड़ी उपलब्धि है। आपका संयम पर्याय लंबा रहे, स्वास्थ्य का ध्यान रखें और धर्म की प्रभावना होती रहे।'

२. युवाचार्यश्री का उद्बोधनः युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने कहा कि—'साध्वी राजीमती जी धर्मसंघ की विशिष्ट साध्वी हैं। आत्मा के प्रति निश्चय व व्यवहार का उनका जीवन क्रम सबके लिए प्रेरणादायी है।'

३. साध्वी प्रमुखा श्री व साध्वी वर्याजी के विचारः साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने साध्वी जी की संघ-भक्ति और जन-सेवा की सराहना की। साध्वी वर्या संबुद्ध यशा जी ने उनके सादगीपूर्ण और जागरूक संयम जीवन का उल्लेख किया।

श्रावक-श्राविकाओं व चारित्रात्माओं की अभिव्यक्तिः साध्वी कनक श्री जी, साध्वी कल्पलता जी, मुनि दिनेश कुमार जी, समणी नियोजिका मधुर प्रज्ञा जी तथा स्वयं साध्वी राजीमती जी ने पूज्य प्रवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

आचार्य श्री तुलसी और स्थिरीकरण का अनुभव

आचार्य जी ने अपने जीवन का एक व्यक्तिगत अनुभव साझा किया। उन्होंने बताया कि जब आचार्य श्री तुलसी ने युवाचार्य महाप्रज्ञ जी को दिल्ली में ठहराया था, तब उन्होंने मुनि श्री मधुकर जी और मुनि श्री किशन लाल जी को विशेष रूप से दिल्ली भेजा था। इसका उद्देश्य उन मुनियों को 'स्थिरीकरण' प्रदान करना था जो धर्म मार्ग में अस्थिर महसूस कर रहे थे। उन्होंने समझाया कि धर्म संघ में अस्थिरता आने पर साधुओं को समझाकर पुनः मार्ग पर लाना एक अत्यंत महत्वपूर्ण सेवा है।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

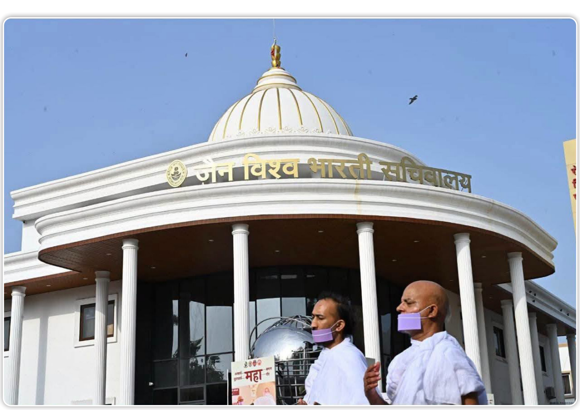

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।